श्रीमान् भ्राता श्री भवानीलाल जी भारतीय एम.ए. को सादर सप्रेम भेंट
शिवपूजन सिंह कुशवाहा

सम्मत्यर्थ

ओ३म् खम्ब्रह्म

अष्टादश पुराण परिशीलन

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 2863
विरजानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

लेखक

जादूसम्राट वैदिकगवेषक आचार्य शिवपूजन सिंह कुशवाहा
'पथिक' बी० ए० साहित्यालङ्कार, विशारद, विद्या
सिद्धान्तवाचस्पति, ए. आई. एम. सी. (कल
कानपुर

डा० भवानी
संख्या ...
तिथि ......
पुस्तकालय
डा० भवानी
पुस्
प्राप्ति क्रम
विषय ......
दिनांक............

प्रकाशक
जयदेव ब्रदर्स
आत्मा राम पथ, बड़ोदा १

प्रथम संस्करण] १९६१ [मू० ७५ न. पैसे

प्रकाशकः—
जयदेव ब्रदर्स, आत्माराम पथ
बड़ौदा. १

मुद्रकः—
श्री विष्णुदत्त दयाल
प्रवासी प्रेस
आदर्शनगर अजमेर

पुस्तक विक्रेताओं तथा पुस्तकालयों के लिए एक मात्र ११ वर्षों से नियमित प्रकाशित होनेवाले अनूठे हिन्दी-इंग्लिश मासिक

'साहित्य प्रचारक' पुस्तक विक्रेता

BOOK SELER BARODA

की विशेषताएं

❀ भारत में पुस्तकालयों को मुफ्त दिया जाता है ।

❀ पुस्तक प्रवृत्ति का सर्व प्रथम अपने ढंग का अकेला मासिक प्रतिमास १ बार सूचना पुस्तक सहित प्राप्त होने पर पुस्तकका विज्ञापन मुफ्त छापा जाता है ।

❀ विज्ञापन का सर्वोत्तम साधन । विज्ञापन छपाई नक़द न देकर किसी भी रूप में स्वीकार की जाती है यथा पुस्तकों द्वारा, परिवर्तन या विज्ञापित वस्तुएं विज्ञापन के मूल्य की देकर ।

❀ युरोप, अमेरिका, जापान, चीन, आस्ट्रेलिया, एशिया, रशिया में जाता है । विदेशों में वा० मू० २) स्वदेश में रु० १)

साहित्य प्रचारक पो० बा० ४६ बड़ोदा,

श्री आचार्य शिवपूजनसिंह कुशवाहा 'पथिक' B. A. रचित उत्कृष्ट ग्रन्थ

पु. वि. के ग्राहकोंको स्वप्रकाशित, पोने मूल्यमें

१. अद्भुत वैज्ञानिक जादू विद्या कौशल

जिसमें समस्त विज्ञान के खेल हैं कोलेजों में पढनेवाले सायन्स के छात्रों के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं। इसके अतिरिक्त इस में द्रव्योपार्जन के लिये सस्ते और परीक्षित औद्योगिक नुस्खे तथा प्रत्येक जादूगरों के जानने के लिये सभी बातों पर प्रकाश डाला हैं। आजही आर्डर दें। मू ५।) रु.

अथर्व वेद की प्राचीनता ३७ न.पै.

भारतीय इतिहास की रूप रेखा पर एक सामीक्षात्मक दृष्टि २५ न.पै.

आर्य समाज के द्वितीय नियम की व्याख्या ५० न पै.

महर्षि दयानन्दजी कृत वेदभाष्यानुशीलन १)

भारतीय इतिहास और वेद १९न.पै.

आर्यसमाज में मूर्तिपूजा ध्वान्त निवारण ३१ न. पै.

वामनावतार की कल्पना २५ न.पै.

वैदिक काल में तोप और बन्दूक ६ न. पै.

उपनिषदों की उत्कृष्टता ०-१३

वैदिक एज पर सामीक्षात्मक दृष्टि ०-७५

महर्षि दयानन्दजी की दृष्टि में यज्ञ ०-६

पाश्चात्यों की दृष्टि में वेद ईश्वरीय-ज्ञान ३७ न. पै.

कुशवाहा क्षत्रियोत्पत्ति मीमांसा १॥)

राठोड़ कुलोत्पत्ति मीमांसा १॥)

जादू विद्या रहस्य २०)

मनोवैज्ञानिक जादू विद्या के चमत्कार मू० ५)

बाइबल में वर्णित बर्बरता तथा अश्लीलता का दिग्दर्शन ३१ न.पै.

बाईबल की विध्वंसकारी शिक्षा ६ न. पै.

ईसाईमत का कच्चा चिट्ठा ६ न.पै.

पाश्चात्यों की दृष्टि में इस्लामीमत प्रवर्तक ३१ न. पै.

महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास की सारगर्भित व्याख्या ५० न. पै.

शिवलिंग पूजा पर्यालोचन २५ न.पै.

आर्यसमाज को समझने में पौराणिकों का भ्रम २५ न. पै.

—०—

वैदिक संस्कार माला

लेखक राजमित्र आत्माराम अमृतसरी

	न. पै
१ अन्नप्राशन संस्कार	२५
२ नामकरण संस्कार	१६
३ कर्णवेध संस्कार	३७
४ उपनयन संस्कार	७५
५ वेदारम्भ संस्कार	१–५०
६ दिग्विज्ञान	२–०
७ कुंगमुनि ज्ञानामृत	१–२५
८ चीनकी संस्कृति	१–५०
९ बालोद्यान पद्धति का गृहशिक्षण	१–०
१० आलमगीर के पत्र	१–७५
११ मेरी युरोप की यात्रा सोमानी	१–००

–न.पै.

१२ गीतासार यह पुस्तक का छठा संस्करण है। इस में गीता के १०० श्लोकों को चुनकर रखा है और हिन्दी गुजराती अनुवाद संस्कृत श्लोकों के नीचे दिया है। वह बड़ा ही उत्तम स्वाध्याय का ग्रन्थ होने के अतिरिक्त गुजराती भाषा भी सिखाता है मूल्य ७५ न. पै.

१४ त्रिदेवनिरूपण ०–३१

१५ राजरत्न आत्मारामजी की जीवनी ०–१३

१६ धर्म की उत्पत्ति और विकास

पुस्तकें मिलने का पता:—

जयदेव ब्रदर्स, आत्माराम पथ, बड़ोदा १

ओ३म् खम्ब्रह्म

अष्टादश पुराण-परिशीलन ।

वर्तमान पुराणों के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्दजी महाराज लिखते हैं:—

"जो अठारह पुराणों के कर्त्ता व्यासजी होते तो उनमें इतने गपोड़े न होते, क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगशास्त्र के भाष्य आदि व्यासोक्त ग्रन्थों के देखने से विदित होता है कि व्यासजी बड़े विद्वान्, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी मिथ्या कथा कभी न लिखते और इससे यह सिद्ध होता है कि जिन सम्प्रदायी परस्पर विरोधी लोगों ने भागवतादि नवीन कपोलकल्पित ग्रन्थ बनाये हैं उनमें व्यासजी के गुणों का लेश भी नहीं था, और वेदशास्त्र विरुद्ध असत्यवाद लिखना व्यास सदृश विद्वानों का काम नहीं किन्तु यह काम विरोधी स्वार्थी, अविद्वान् पामरों का है। इतिहास और पुराण शिव पुराणादि का नहीं.... ।"[१]

पुराणों को सत्य सिद्ध करने के लिए विद्यावारिधि पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र, श्री काल्लूराम शास्त्री तथा श्री माधवाचार्य शास्त्री ने प्रचुर प्रयास किया है। मिश्रजी ने "अष्टादशपुराण दर्पण" श्री काल्लूराम ने "पुराणवर्म" और श्रीमाधवाचार्य ने "पुराण दिग्दर्शन" पुस्तकें लिखी हैं। तीनों ने विभिन्न स्थलों पर आर्य समाज पर

१ "सत्यार्थ प्रकाश" एकादश समुल्लास ।

कीचड़ उछालने का कुप्रयास किया है। आर्य समाज की ओर से श्री चिम्मनलाल वैश्य ने "पुराण-तत्व-प्रकाश" और आचार्य रामदेवजी बी० ए०, तथा पं० जयदेवजी शर्मा विद्यालंकार ने "पुराण मत पर्यालोचन" ग्रन्थ लिखा था। ये दोनों ग्रन्थ अब अप्राप्य हैं।

पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र मुरादाबादी पौराणिकमत के दिग्गज विद्वान् माने जाते थे। वाराणसी के भारत धर्म महामण्डल ने उनकी पौराणिक मत की सेवाओं के कारण "विद्यावारिधि" उपाधि से पुरस्कृत किया था। आपने आर्य समाज के खण्डन में "दयानन्द तिमिर-भास्कर" आदि कई ग्रन्थों को लिखा था। पुराणों के मण्डन में उन्होंने "अष्टादश पुराण दर्पण"२ नामक ग्रन्थ लिखा।

सबसे प्रथम नारदीय मत से अठारह पुराणों के नाम लिखे जाते हैं। मिश्रजी ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ ५१ पर "भिन्न भिन्न पुराणों के मत से १८ पुराणों का क्रम और श्लोक संख्या" इस शीर्षक के नीचे १८ पुराणों के नाम दिये हैं। आप लिखते हैं:—

"(१) ब्रह्म पुराण, (२) पद्म पुराण, (३) विष्णु पुराण, (४) वायु पुराण, (५) भागवत पुराण, (६) नारद पुराण, (७) मार्कण्डेय पुराण, (८) अग्नि पुराण, (९) भविष्य पुराण, (१०) ब्रह्मवैवर्त्त पुराण, (११) लिङ्ग पुराण, (१२) वाराह पुराण, (१३) स्कन्द पुराण, (१४) वामन पुराण, (१५) कूर्म्म पुराण, (१६) मत्स्य पुराण, (१७) गरुड़ पुराण, (१८) ब्रह्माण्ड पुराण।"

---

२ संवत् १९९३ वि० में श्रीवेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई द्वारा प्रकाशित।

इस नामावली में बड़ा विवाद है। कोई श्रीमद्भागवत को महापुराण स्वीकार करता है, तो कोई इसे उपपुराणों में गिनती कर देवी भागवत को महापुराणों की श्रेणी में लाता है। मिश्रजी दोनों को ही महापुराण[३] मानते हैं। आप लिखते हैं:—"……इन दोनों शङ्काओं पर हमको यह कहना है कि जब दूसरे पुराणों में दोनों महापुराणों का वर्णन है तब क्यों कर एक ही भागवत होगी यह निश्चय है।……व्यासजी ने दोनों की महिमा में एक एक स्वतन्त्र ग्रन्थ की रचना की है यह दोनों ही महापुराण हैं।…"[४]

किन्तु इससे पुराणों की संख्या उन्नीस हो जाती है, पर मिश्रजी को यह बात ध्यान में न आई।

भागवत पुराण:—भागवत पुराण दो हैं एक **देवी भागवत** और दूसरा **श्रीमद्भागवत** (विष्णु भागवत)। श्रीमद्भागवत वैष्णवों का और देवी भागवत शैव, शाक्तों का इन दोनों के मानने वाले साम्प्रदायिकों का बड़ा विवाद है। देवी भागवत वाले अपने पुराण को १८ ही में मानकर दूसरे को उपपुराण कहते हैं।

"नारद" और "पाद्म" मत से "विष्णु भागवत" ही महा पुराण है, किन्तु मत्स्यादि मत से देवी भागवत ही महापुराण में गिना जाता है। वास्तव में दोनों ही साम्प्रदायिक ग्रन्थ हैं और वेद व्यास के नाम पर प्रसिद्ध की गई हैं।

---

३ श्रीकालूराम शास्त्री ने "पुराणवर्म" पूर्वार्द्ध, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ ११७ तथा श्रीमाधवाचार्य ने "पुराण-दिग्दर्शन" द्वितीय संस्करण पृष्ठ ८ में भी महापुराण माना है।

४ "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ १९४। (मिश्र जी कृत)

यही भागवत वास्तविक भागवत है इसके प्रमाणित करने के लिए वैष्णव साम्प्रदायिक विद्वान् निम्नाङ्कित प्रमाणों को प्रस्तुत करते हैं।

(क) भागवत के टीकाकार श्रीधर स्वामी ने "श्रीमद्भागवत" को ही प्रामाणिक माना है। उन्होंने आरम्भ में ही लिखा है कि "भागवतनामन्यदित्यपि नाशंकनीयम्" अर्थात् भागवत नामक अन्य पुस्तक है ऐसी शङ्का करनी उचित नहीं।

श्रीधर स्वामी ने इस टीका के उपक्रम में लिखा है:—

"द्वात्रिंशत्त्रिंशतश्च यस्य विलसच्छाखाः"—जिसकी अध्याय संख्या ३३२ है।

(ख) पद्मपुराण में भागवत से "श्रीमद्भागवत" का ही ग्रहण किया दूसरे देवी भागवत का नहीं। यथा—

"पुराणेषु च सर्वेषु श्रीमद्भागवतं परम्।
यत्रप्रतिपदं कृष्णो गीयते बहुधर्षिभिः॥"

(ग) बृहन्नारद पुराण में भी इसी शुकशास्त्र भागवत की विषयानुक्रमणिका दी है, देवी भागवत की नहीं।

(घ) भागवत के प्रथम स्कन्द के चौथे अध्याय में लिखा है कि चार वेद तथा पांचवां इतिहास पुराण बना चुकने पर भी, जब वेद व्यास को सन्तोष न हुआ तब यह भागवत पुराण बनाया।

वैष्णव और शैव सम्प्रदाय दोनों में अपने अपने भागवत के लिए घोर संग्राम रहा है।

प्रथम पुस्तक श्री रामाश्रम की "दुर्जन मुखचपेटिका" है

इसमें देवी भागवत वाले को कोसा गया हैं तथा श्रीमद्भागवत की सत्यता का निर्धारण किया है। दूसरी पुस्तक है श्रीकाशीनाथजी की "दुर्जनमुख महाचपेटिका" अर्थात् "दुष्ट के मुँह पर बहुत बड़ा थप्पड़"। इसमें देवी भागवत का पक्षपोषण किया गया है। तीसरी पुस्तक है श्रीपुरुषोधमजी की "दुर्जनमुख पद्मपादुका" अर्थात् "दुष्ट के मुख कमल पर जूता।" इसमें श्रीमद्भागवत का पक्ष है। इसी प्रकार श्रीमधुसूदन सरस्वती के "सर्व शास्त्रार्थ संग्रह" में, श्री नागोजी भट्ट के निबन्ध में श्री पुरुषोत्तम के "भागवत स्वरूप विषयशंका निराश" में श्रीमद्भागवत को महापुराण कहा गया है।

मिताक्षरा के टीकाकार श्रीबाल भट्ट "श्रीमद्भागवत" को एकसाथ ही पुराण नहीं गिनते हैं।

"पुराणार्णव" के श्लोकानुसार "विष्णु भागवत" (श्रीमद्भागवत) को ही महापुराण समझा जाता है।

मिश्रजी लिखते हैं:—"इस देश के अनके लोगों का विश्वास है कि विष्णु भागवत सुप्रसिद्ध बोपदेव की बनाई हुई है, वास्तविक बोपदेव रचित भागवतानुक्रम भी पाया गया है। बड़े ही आश्चर्य का विषय है। कोलब्रुक प्रमुख अनेक पाश्चात्य पण्डित भी बोपदेव को भागवत रचयिता कह कर विश्वास करते हैं।"[५]

महर्षि दयानन्दजी महाराज भी लिखते हैं कि:—"यह भागवत बोपदेव का बनाया है जिसके भाई जयदेव ने गीतगोविन्द बनाया है। देखो! उसने यह श्लोक अपने बनाये "हिमाद्रि" नामक

५ "अष्टादश पुराण दर्पण", पृष्ठ १८७।

ग्रन्थ में लिखे हैं कि श्रीमद्भागवत पुराण मैंने बनाया है ।....."[६]

इसकी पुष्टि पुराण से भी होती है:—

"तोतादर्यां द्विजः कश्चिद्वोपदेव इति श्रुतः ।
बभूव कृष्णभक्तश्च वेदवेदाङ्गपारगः ॥१॥
गत्वा वृन्दावनं रम्यं गोपगोपीनिषेवितम् ।
मनसा पूजयामास देवदेवं जनार्दनम् ॥२॥
वर्षान्ते च हरिः साक्षात् ददौ ज्ञानमनुत्तमम् ।
तेन ज्ञानेन संप्राप्ता हृदि भागवती कथा ॥३॥
शुकेन वर्णिता या वै विष्णुरातायधीमते ।
तां कथां वर्णयामास मोक्षमूर्त्ति सनातनीम् ॥४॥
त्वया दत्तं भागवतं श्रीमद् व्यासेन निर्मितम् ।
माहात्म्यं तस्य मे ब्रूहि यदि दत्तो वरस्त्वया ॥७॥

[भविष्य पुराण, प्रति सर्ग पर्व ३, खण्ड २, अध्याय ३२, श्लोक १ से ७ तक]

अर्थात्:—"तोतादरी नाम नगरी में कोई बोपदेव नाम का ब्राह्मण प्रसिद्ध था। जो कि कृष्ण का भक्त तथा वेद वेदाङ्ग का पूर्ण विद्वान् था ॥ १ ॥ वह गोप तथा गोपियों से वासित सुन्दर वृन्दावन में जाकर देवों के देव कृष्णजी की मन से पूजन करने लगा ॥ २ ॥ एक वर्ष के पश्चात् हरि ने साक्षात् उत्तम ज्ञान दिया।

६ "सत्यार्थ प्रकाश" एकादश समुल्लास ।

उस ज्ञान से हृदय में भागवत की कथा प्राप्त हुई ॥ ३ ॥ जो शुक ने बुद्धिमान् विष्णुरात के लिए वर्णन की थी उसी कथा सनातन मोक्षरूप को बोपदेव ने वर्णन किया ॥ ४ ॥ बोपदेव ने कृष्ण से प्रार्थना की कि "हे भगवान् ! आपने व्यासदेव से बनाई हुई श्री मद्भागवत जो मुझे दी है यदि आपने मुझे वर दिया है तो उस भागवत का माहात्म्य आप मेरे लिए कहिए ॥ ७ ॥"

पुराण के उपर्युक्त कथन पर विचार:—"महर्षि दयानन्दजी के लेख की स्पष्ट पुष्टि हो रही है कि भागवत बोपदेव का बनाया हुआ है। उसमें केवल इतना हेर फेर है कि हरि ने बोपदेव को वह श्रीमद्भागवत दिया जो व्यासजी ने बनाया था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह अपनी पुस्तक को प्रचलित करने का ढङ्ग है। बोपदेवजी ने भागवत को बनाकर यह प्रसिद्ध किया कि यह भागवत मुझे हरि ने साक्षात् दिया है तथा यह वही भागवत है जो व्यासजी ने बनाया था। जिस व्यासजी ने शारीरिक सूत्र, गीता, महाभारत, जैसे ग्रन्थों को लिखा उससे यह आशा नहीं है कि वह श्रीमद्भागवत जैसा व्यभिचार की शिक्षा देने वाला तथा योगिराज श्रीकृष्ण को बदनाम करने वाला ग्रन्थ लिखता।"

"देवी भागवत" को महा पुराण मानने वालों की कुछ युक्तियाँ हैं कि सूर्य पुराण में वृत्रासुरवध को ही देवी का चिन्ह बताया है उसी देवी के सम्बन्ध में "देवीभागवत" है। श्रीमद्भागवत में वृत्रासुर वध है परन्तु वह इन्द्र कृत है देवी कृत नहीं।

यह युक्ति देवी भागवत के प्रसिद्ध टीकाकार शैव नीलकण्ठ ने दी है

परन्तु आनन्दाश्रम ग्रन्थावलि की मुद्रित "सौर पुराण" में इस प्रमाण के सम्बन्ध में "क्रूं वृत्तासुरं तथा" के स्थान में "क्रूरं चित्रासुरं तथा-" ऐसा पाठ है और साथ ही नव हस्तलिखित प्रतिलिपियों में भी कोई भिन्न पाठान्तर नहीं। सम्भवतः स्वार्थ सिद्धि के लिए ही श्री नील कण्ठ ने पाठ परिवर्तन करके देवीभागवत की उत्कृष्टता प्रदर्शित की है। इस प्रकार श्रीमद्भागवत दोनों ही साम्प्रदायिकों की लीला है।

ब्रह्म पुराण:—

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र ने इस ब्रह्म पुराण का वर्णन "अष्टादश पुराण दर्पण" के पृष्ठ ५२ से ७४ तक किया है। विलसन आदि पाश्चात्य पण्डितों के मत का खण्डन करते हुए आप पृष्ठ ७० में लिखते हैं:—

"पुराणों में कहीं कहीं कुछ प्रक्षिप्त अंश मिलता है पर सब में नहीं कहीं किसी में ऐसा अंश है सो स्पष्ट दिखाई देता है, सो कहीं हम लिखेंगे।"

एक दिग्गज पौराणिक पण्डित भी पुराणों में प्रक्षेप (मिलावट) मानते हैं, परन्तु सब में नहीं। पुराणों को ऊहापोह से अध्ययन करने से स्पष्ट पता चलता है कि प्रायः सभी पुराणों में प्रक्षेप है, कई पुराणों में से श्लोक निकाले भी गए हैं। पुनः पृष्ठ ७० में ही आगे मिश्रजी लिखते हैं कि:—

"मत्स्य पुराण के मत से ब्रह्म पुराण १३००० तेरह सहस्र है और किसी पुराण के मत से १०००० है जिसकी पहले सूची दी है वह १३ तेरह सहस्र से कुछ विशेष है। एक आदि ब्रह्म पुराण

है वह आठ सहस्र के लगभग है और इस ब्रह्म पुराण से बहुत मिलता है और आर्ष भी विदित होता है।"

मिश्रजी के इस लेख से ज्ञात होता है कि ब्रह्म पुराण की श्लोक संख्या में स्वयं पुराणों में ही मतभेद है। पौराणिकों के कथनानुसार यदि पुराण वेद व्यासजी प्रणीत हैं तो वे एक पुराण में एक संख्या और दूसरे में दूसरी संख्या लिखते हैं। इसका क्या कारण है ? क्या श्री दीनानाथ शर्मा शास्त्री व श्री माधवाचार्य शास्त्री इस पर प्रकाश डालेंगे ? अपने ही ग्रन्थ की अवस्था में ऐसा मतिविभ्रम !

इससे प्रकट हो गया कि यह वर्तमान 'ब्रह्मपुराण' अपनी असली अवस्था में नहीं है। फिर एक 'आदि ब्रह्मपुराण' मिलता है, वह "इस ब्रह्मपुराण से बहुत मिलता है" किन्तु श्लोक संख्या आठ सहस्र ही है केवल पांच सहस्र का अन्तर है।

'आदि ब्रह्मपुराण' की सूची पृष्ठ ७० से ७३ तक देकर आप पृष्ठ ७३ में लिखते हैं:—

"यह ग्रन्थ आठ सहस्र से अधिक है संभव है कि १०००० दश सहस्रवाला यह ग्रन्थ हो और दश सहस्र संख्या कहने वाले पुराण के समय उस द्वापर युग का यह हो। पूना के छपे ब्रह्मपुराण में १३७८३ श्लोक पाये जाते हैं, जिससे विदित होता है कि यह मत्स्य पुराण प्रतिपादित ब्रह्मपुराण है तब ७८३ श्लोकों का इसमें फेरफार है वे लेखक प्रमाद से या माहात्म्य रूप से बढ़े सो जानना कठिन है।"

मिश्रजी तथा कतिपय पौराणिक पण्डितों ने यह युक्ति निकाली

है कि प्रत्येक द्वापर युग के अन्त में एक व्यास देव हुआ करते हैं, ये सनातन से चली आती 'पुराण संहिता' का विभाग करते हैं। इस समय जो पुराणों में भेद लक्षित होता है उसका कारण यह है कि कोई कोई पुराण इस द्वापर युग से पूर्व के द्वापर युग का इनमें मिल गया है।

इसी लचर युक्ति की शरण लेकर मिश्रजी ने 'ब्रह्मपुराण' की श्लोक संख्या के सम्बन्ध में उत्पन्न भ्रम का निराकरण करना चाहा है। परन्तु मिश्रजी की यह युक्ति सारहीन और हास्यास्पद है। जब एक बार पुराण संहिता का विभाग हो गया, पुनः उसके विभाग करने की क्या आवश्यकता आ पड़ी।

७८३ श्लोकों की गड़बड़ी मानकर भी पृष्ठ ७४ में मिश्रजी लिखते हैं कि:—

"... सो यह वैसा न होकर अपने लक्षणों से सम्पन्न होने से सर्वथा मान्य और प्रमाणीभूत है, स्कन्द पुराण से यह ब्रह्म माहात्म्य सूचक पुराण है पर इसके मत से "पुराणं वैष्णवं त्वेतत्सर्व-किल्विषनाशनम्" २४५।२० यह वैष्णव पुराण है।"

मिश्रजी ने यहाँ ब्रह्मपुराण, स्कन्द पुराण में मतभेद बतला दिया। इसके बाद पृष्ठ ७४ पर....प्रयाग माहात्म्य....मायापुरी माहात्म्य....आदि कई माहात्म्यों का नाम लिख कर मिश्रजी लिखते हैं:-

"....इत्यादि ब्रह्मपुराण के अनन्तर लिखे गये हैं परन्तु मूल ब्रह्मपुराण में इन्होंने स्थान नहीं पाया। एक आदि ब्रह्मपुराण लखीमपुर और लखनऊ में छपा है इसमें १२५ अध्याय हैं उसमें ब्रह्मपुराण की बहुत सी कथा हैं।"

क्या श्री माधवाचार्य, श्री दीना नाथ शास्त्री बतलायेंगे कि माहात्म्यों ने अपराध किए कि वे बेचारे मूलपुराण में स्थान न पा सके ? लखीमपुर, लखनऊ में मुद्रित "ब्रह्मपुराण,' में "ब्रह्मपुराण की बहुत सी कथा हैं" सारी तो नहीं। किसी में कथा अधिक किसी में कम पर आपके यहां सब मान्य है !! इसी कारण से ईसाई प्रचारकों ने जाली वेद, पुराण बनाकर लाखों पौराणिकों को ईसाई बना डाला था।

गरुड़पुराणः—

इस पुराण में भी बहुत गड़बड़ी है। स्वयं पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र अपनी पुस्तक "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ ३९८–३९९ में लिखते हैं:—"....केवल श्लोक लेकर ही गड़बड़ है, आदि गरुड़ की श्लोक संख्या १८००० है, किन्तु प्रचलित गरुड़ पुराण के संख्या स्थल में प्रायः सात हजार श्लोक कम होते हैं, फिर भविष्य राजवंशाख्यान का पूर्वांश पाठ करने पर ज्ञात होता है कि यह पुराण जनमेजय के समय में प्रथम संकलित हुआ था। १४४–४२ पश्चात् भविष्य राज वर्णन स्थल में राजा शूद्रक पर्य्यन्त नाम होने से (१४८) एवं विष्णु, मत्स्य आदि समान अन्ध्रगुप्त आदि राजगण उल्लेखन होने से, प्रचलित गरुड़ हमको विष्णु मत्स्य आदि पुराण की अपेक्षा अधिक प्राचीन बोध होता है। .....जो कुछ भी हो, आदि गरुड़ का सम्पूर्ण अंश न होने पर भी और वर्तमान रूप धारण काल में स्थान विशेष में प्रक्षिप्त अंश संयोजित होने पर भी गया माहात्म्य छोड़ कर यह प्रचलित गरुड़ पुराण यथायोग्य पाया जाता है।"

मिश्रजी के लेख से स्पष्ट हो रहा है कि गरुड़ पुराण में श्लोकों की गड़बड़ी है और राजा जनमेजय के समय में संकलित हुआ है। पाठक ही विचार सकते हैं कि यह पुराण किस प्रकार प्रामाणिक हो सकता है।

श्री कालूराम शास्त्री भी लिखते हैं:—"....इसकी श्लोक संख्या १८५०० है अतएव कहीं पर अट्ठारह हजार और कहीं पर १९ हजार लिखा है किन्तु वर्तमान में जो गरुड़ पुराण उपलब्ध होता है उसकी श्लोक संख्या ११००० है।"७

गरुड़ पुराण के सात सहस्र श्लोकों का पता न मिश्रजी को लगा और न श्री कालूराम शास्त्री को लगा। अब शायद श्री माधवाचार्य शास्त्री पता लगा लें।

सन् १९०३ ई० निर्णय सागर प्रेस, बम्बई में मुद्रित सम्पूर्ण गरुड़ पुराण में गिनने पर श्लोक केवल १२९१ ही पाए जाते हैं।

पं० गंगा प्रसाद जी एम. ए. कार्य निवृत्त मुख्य न्यायाधीश टेहरी गढ़वाल लिखते हैं:—"मुझको पहले गरुड़पुराण का एक छोटा संस्करण मिला जो लखनऊ के प्रसिद्ध नवलकिशोर प्रेस का छपा हुआ था। उसमें १५ अध्याय और लगभग १००० श्लोक हैं। पीछे मुझको इस पुराण का एक बड़ा संस्करण मिल गया जो श्री पंचानन तर्करत्न का सम्पादित और कलकत्ते में छपा हुआ था। उसमें दो खण्ड हैं, पूर्व खण्ड में २४३ अध्याय हैं।...."८

---

७ "पुराणवर्म" पूर्वार्द्ध, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ १३३।

८ "गरुड़ पुराण की आलोचना" प्रथम संस्करण, पृष्ठ १, २।

गरुड़पुराण के दो खण्ड कहे जाते हैं। प्रथम खण्ड निर्णय-सागर प्रेस में मुद्रित पुस्तक में नहीं है। मिश्रजी और कलकत्ते के मुद्रित ग्रन्थ में २४३ अध्याय हैं तथा दूसरे खण्ड में ४५ अध्याय हैं परन्तु निर्णय सागर प्रेस वाली पुस्तक में १६ ही अध्याय हैं।

संवत् १९३३ वि. में खेमराज श्री कृष्णदास वेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस बम्बई में मुद्रित "गरुड़पुराण" में ११९८६ श्लोक हैं।

अठारह सहस्र और उन्नीस सहस्र में तो केवल एक सहस्र का अन्तर है उसका कुछ समाधान भी हो सकता था परन्तु इतने महान् अन्तर के लिए क्या समाधान हो सकता है?

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र ने स्वयं "गरुड़ पुराण" के सम्बन्ध में ऊटपटांग बातें लिख दी हैं:—(क) वर्तमान गरुड़ पुराण आदि गरुड़ पुराण नहीं है। (ख) वर्तमान रूप में यह स्थान विशेष में प्रक्षिप्त अंश से युक्त है। (ग) गया माहात्म्य इसमें न होना चाहिए। (घ) इतने पर भी यह पुराण यथायोग्य पाया जाता है।"

मिश्रजी कैसी विचित्र बात कह रहे हैं। जब यह गरुड़ पुराण आदि असली नहीं है तो पुनः यथायोग्य कैसे? प्रक्षेपों से युक्त होने पर भी यथायोग्य कैसे? जो बात इसमें न होनी चाहिए उसके होने पर यथायोग्य कैसे?

यदि मिश्रजी ऐसी बात न लिखते तो पुराणों की रक्षा कैसे होती।

पद्म पुराण:—

"पद्म पुराण" सारा ही विवादग्रस्त है। इसके लिए कितने ही

संस्करण मिलते हैं। जिनमें से मुख्य दो हैं, प्रथम ५ खण्ड वाला, दूसरा ६ खण्ड वाला। इन दोनों में खण्डानुक्रम का भी भेद है। अध्यायों में तथा प्रतिपाद्य विषय सूची तक में भेद है।

'आनन्दाश्रम' पूना में मुद्रित के ६ खण्ड इस क्रम से हैं:— "(१) आदि खण्ड, (२) भूमिखण्ड, (३) ब्रह्म खण्ड, (४) पाताल खण्ड, (५) सृष्टि खण्ड, (६) उत्तर खण्ड।"

श्री वेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस बम्बई में मुद्रित के अनुसार ५ खण्ड ही है:—"(१) सृष्टि खण्ड, (२) भूमि खण्ड, (३) स्वर्ग खण्ड, (४) पाताल खण्ड; (५) उत्तर खण्ड।"

दाक्षिणात्य में प्रचारित पद्म पुराणीय उत्तर खण्ड (१) में— "(१) सृष्टि-खण्ड, (२) भूमि खण्ड, (३) पाताल खण्ड, (४) पुष्कर खण्ड, (५) उत्तर खण्ड।"

नारद पुराण में— "(१) सृष्टि खण्ड, (२) भूमि खण्ड, (३) स्वर्ग-खण्ड, (४) पाताल खण्ड, (५) उत्तर खण्ड।"

अब विज्ञ पाठक स्वयं निर्णय करें कि कौन सा क्रम उपादेय और कौन सा क्रम हेय है। किस क्रम को सच्चे वेदव्यासजी प्रणीत माना जाय और किस क्रम को मिथ्यावादी व्यास का कहा जाय?

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र "अष्टादश पुराणदर्पण" पृष्ठ ९७ में "पद्म पुराण सृष्टि खण्ड १।५४।६० का उद्धरण देकर पृष्ठ ९८ में अपनी टिप्पणी लिखते हैं:—"सृष्टि खण्ड में ऐसे पञ्चपर्वात्मक पद्मपुराण का उल्लेख होने पर भी अब हम पद्मपुराण का कोई पर्व नहीं देखते। सृष्टि में ऐसा वर्णित होने पर भी उत्तरखण्ड में

अन्य प्रकार के खण्ड विभाग का परिचय पाया जाता है।"

मिश्रजी का तात्पर्य है कि अब पुराना पद्म पुराण नहीं मिलता है। यहां तक पद्म पुराण की अपनी साक्षी के आधार से वर्तमान पद्म पुराण की प्रामाणिकता संशयगर्त्त में गिर गई।

दाक्षिणात्य देश में प्रचलित पद्म पुराण का एक प्रमाण मिश्रजी ने दिया है। उसमें पद्म पुराण के चतुर्थ खण्ड का नाम "पुष्कर खण्ड" है किन्तु प्रचलित पद्म पुराण की दशा ही कुछ विचित्र है।

इस पर मिश्रजी पृष्ठ ९८ में लिखते हैं:—

"ऊपर जो पञ्चम खण्ड का उल्लेख किया गया है प्रचलित पद्म पुराण में पुष्कर खण्ड का सम्पूर्ण अभाव है। प्रचलित पद्म पुराण के कई अध्यायों में पुष्कर माहात्म्य वर्णित हुआ है।"

मिश्रजी के लिखने का तात्पर्य है कि "पद्म पुराण" में पुष्कर माहात्म्य सूचक पुष्कर खण्ड नाम का कोई खण्ड नहीं है।

यहां पद्म पुराण स्वयं अपने विरुद्ध प्रमाण दे रहा है। गौड़ीय पद्म पुराण का प्रमाण देकर मिश्रजी पृष्ठ ९९ पर लिखते हैं:—

"वास्तव में गौड़ीय पद्मोत्तर खण्ड में जैसे खण्ड विभाग वर्णित हुए हैं, नारद पुराण में भी ठीक ऐसे पञ्च खण्डात्मक पद्म पुराण का विषयानुक्रम दिया गया है।"

अर्थात् दाक्षिणात्य पद्म पुराण के साथ इसका मेल नहीं है। मिश्रजी "नारद पुराण" से पद्म पुराण की विषय सूची पृष्ठ ९९ से १०३ तक उद्धृत करके पृष्ठ १०४ में लिखते हैं कि:—

"ऊपर जितने प्रमाण उद्धृत हुए हैं, प्रचलित पद्म पुराण के साथ मिला कर देखने से हम ऐसा जान सकते हैं कि, आदि पद्म पुराण के लक्षण और विषयादि का प्रचलित पद्म पुराण में सम्पूर्ण अभाव नहीं है। मत्स्य और नारद पुराण में जैसे लक्षण निर्दिष्ट हुए हैं वे सब ही प्रचलित पद्म पुराण में पाए जाते हैं। किन्तु पहिले पद्म पुराण का जैसा खण्ड विभाग था उसका सम्पूर्ण परिवर्तन हुआ है।" पद्म पुराण अपनी मूल अवस्था में नहीं रहा। इस बात को मिश्रजी स्पष्ट शब्दों में स्वीकार करते हुए पृष्ठ १०४ में लिखते हैं:—

"प्रचलित पद्म पुराण देखते ही हम पद्म पुराण के तीन संस्करण का परिचय पाते हैं। प्रथम संस्करण में पुष्कारादि करके पाँच पर्वों में पद्म पुराण विभक्त था पांच खण्ड में विभक्त नहीं था। सृष्टि खण्ड से हम इस पञ्चपर्वात्मक पाद्म का सन्धान पाते हैं। विष्णु पुराण में तत्पूर्ववर्ती पद्म पुराण का जो उल्लेख है संभवतः वही पञ्चपर्वात्मक था। प्रथम संस्करण में पौष्कर प्रथम पर्व गिना जाने पर भी दूसरे संस्करण में पौष्कर दूसरे खण्ड में बदल गया और सृष्टि खण्ड में प्रथम पर्व का स्थान अधिकार किया। दाक्षिणात्य में प्रचलित पद्मोत्तर खण्ड से उसका प्रमाण पाया जाता है। तीसरे संस्करण में पौष्कर खण्ड का लोप हुआ संभवतः सृष्टि खण्ड के पुष्कर माहात्म्य के अन्तर्गत हुआ, स्वर्ग खण्ड ने उसका स्थान अधिकार किया गौड़ीय पद्म पुराण और नारद पुराण से इस तीसरे संस्करण के लक्षणादि पाये किन्तु इसके

पीछे भी चौथा संस्करण हुआ। दाक्षिणात्य लोगों ने स्वर्ग खण्ड ग्रहण नहीं किया, उन्होंने स्वर्ग खण्ड के स्थान में ब्रह्म खण्ड ग्रहण किया और यथाक्रम से आदि खण्ड, भूमि खण्ड, ब्रह्म खण्ड, पाताल खण्ड, सृष्टि खण्ड और उत्तर खण्ड इन छः खण्डों में पद्म पुराण विभक्त कर लिया।"

मिश्रजी स्पष्ट शब्दों में अदला बदली, हेरफेर, प्रक्षेप विक्षेप स्वीकार कर रहे हैं।

इतना ही नहीं इसी पृष्ठ १०४ की पाद-टिप्पणी में मिश्रजी लिखते हैं:—

"पूना के आनन्द आश्रम से जो पद्मपुराण प्रकाशित हुआ है, इसके आदि खण्ड और ब्रह्मखण्ड को गौड़ीय पौराणिक लोग कोई भी "पाद्म" कह कर स्वीकार नहीं करता। इस देश की बहुत सृष्टि खण्ड की पोथी आदि वा ब्रह्म कह कर उक्त हुई है।...."

मिश्रजी के लिखने से स्पष्ट प्रकट हो गया कि गौड़ीय पौराणिक, उत्तर भारत या बंगाल के पौराणिक तो सिरे से आदि खण्ड और ब्रह्म खण्ड को पुराण ही नहीं मानते। मिश्रजी को भी दोनों दूसरे ही ग्रन्थ ज्ञात होते हैं। उधर दक्षिणी लोगों को अपना मुद्रित पुराण, पुराण लगता है, गौड़ीय लोगों के पुराण को वे पुराण मानने को उद्यत ही नहीं।

पौराणिक पं० कालूराम शास्त्री भी पद्म पुराण में क्षेपक मानते हैं। वे लिखते हैं:—"इस पद्म की श्लोक संख्या ५५ हजार है इसमें हिरण्यमय पद्म में जगदुत्पत्ति वर्णित है इस कारण इस पुराण को पण्डित लोग "पाद्म" कहते हैं।

उपलब्ध पद्म पुराण में श्लोक संख्या पचपन सहस्र से कुछ अधिक बैठती है अतः कुछ क्षेपक है।"९

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र पुनः लिखते हैं:—"पद्म पुराण के कई संस्कार हुए हैं। एक प्रथम संस्कार वेद व्यासजी का दूसरा संस्कार बौद्धधर्म के ह्रास और सनातन धर्म के पुनः अभ्युदय समय में हुआ और एक संस्करण नारद पुराण के अनुसार रहा इस प्रकार यह संस्कार हुए। यह संस्करण युग भेद के कारण से रहे परन्तु पश्चात् ग्यारहवीं बारहवीं शताब्दी में जब कि श्री स्वामी रामानुजाचार्य और माधवाचार्य का मत इस देश में अधिक प्रचलित हुआ तब सम्प्रदाय के कारण इसमें बहुत सी प्रक्षिप्त श्लोकावली मिलाई गई वही मानो एक प्रकार का चतुर्थ संस्कार है। उदाहरण के लिए पाखण्डियों के लक्षण, मायावाद निन्दा, तामस पुराण वर्णना, ऊर्द्ध पुण्ड्र आदि वैष्णवचिन्ह धारण की कथा भी द्वैतवाद की सुख्याति इत्यादि तृतीय संस्करण में नहीं थी किन्तु इस चौथे संस्करण के समय यह सब आधुनिक कथा प्रविष्ट हुई है।" १०

मिश्रजी को उचित था कि अपने कथन की पुष्टि में हेतु देते कि यह सब तीसरे संस्करण में न था।

आपके कथनानुसार वर्तमान पद्मपुराण अपने शुद्ध रूप में नहीं मिलता। चौथे संस्करण को मिश्रजी क्यों दूषित समझते हैं। इस पर वे लिखते हैं:—

---

९ "पुराणवर्म, पूर्वार्द्ध, द्वितीय सस्करण, पृष्ठ १२६

१० "अष्टादश पुराणदर्पण" पृष्ठ १०५

"इस चौथे संस्करण के उत्तरखण्ड में (२६३।६६-८९) लिखा है—रुद्र बोले, हे देवि ! तामस शास्त्र की कथा सुनो, इस शास्त्र के श्रवणमात्र से ही ज्ञानियों को पातित्य उत्पन्न होता है। मैंने पहिले पहिले शैव पाशुपतादि शास्त्र कहे थे, तदनन्तर मेरी शक्ति में आसक्त ब्राह्मणों ने जो तामस शास्त्र कहे थे उनको सुनो। कणाद, वैशेषिक शास्त्र, गौतम, न्याय, कपिल, सांख्य, धिषण अतिगर्हित चार्वाक मत और दैत्यों के निधनार्थ बुद्धरूपी विष्णु ने नग्ननीलाम्बरों के असत् शास्त्र कहे थे। मायावाद रूप असत् शास्त्र प्रच्छन्न बौद्ध गिने जाते हैं। कलिकाल में ब्राह्मणरूप में मैंने ही यह मायावाद का प्रचार किया है। इसमें लोक निन्दित श्रुति समूह का कदर्थ कर्म रूप परित्याग, सर्व कर्म परिभ्रष्ट विधर्मियों की कथा, परमात्मा के साथ जीव का ऐक्य, ब्रह्म का निर्गुणरूप इत्यादि प्रतिपादित हुआ है। कलिकाल में मनुष्यों के मुग्ध करने के निमित्त ही जगत् में इन सब शास्त्रों का प्रचार हुआ है। मैं जगत् के नाश के निमित्त यह सब अवैदिक महाशास्त्र वेदार्थवत् रचा करता हूं। पूर्वकाल में जैमिनी ब्राह्मण ने भी निरीश्वरवाद प्रचार करने के निमित्त वेद की कदर्थयुक्त पूर्व मीमांसा रची थी, मैं तामस पुराणों को कहता हूँ, प्रमाण—

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि तामसानि यथाक्रमम् ।
तेषां स्मरणमात्रेण मोहः स्याज्ज्ञानिनामपि ॥
प्रथमं हि मयैवोक्तं शैवं पाशुपतादिकम् ।
मच्छक्त्यावेशितैर्विप्रैः प्रोक्तानि च ततः शृणु ॥

कणादेन तु संप्रोक्तं शास्त्रं वैशेषिकं महत् ।
गौतमेन तथा न्यायं सांख्यं तु कपिलेन वै ॥
धिष्णेन च तथा प्रोक्तं चार्वाकमतिगर्हितम् ।
दैत्यानां नाशनार्थाय विष्णुना बुद्धरूपिणा ॥
बौद्धशास्त्रमसत्प्रोक्तं नग्ननीलपटादिकम् ।
मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं बौद्ध उच्यते ॥
मयैव कथितं देवि कलौ ब्राह्मणरूपिणा ।
अपार्थश्रुतिवाक्यानां दर्शयंल्लोकगर्हितम् ॥
स्वकर्मरूपं त्याज्यत्वमत्रैव प्रतिपाद्यते ।
सवकर्मपरिभ्रष्टैर्वैधर्मत्वं तदुच्यते ॥
परेश जीवयोरैक्यं मया तु प्रतिपाद्यते ।
ब्रह्मणोस्य स्वयं रूपं निर्गुणं वक्ष्यते मया ॥
सर्वस्य जगतोप्यत्र मोहनार्थं कलौ युगे ।
वेदार्थवन्महाशास्त्रं मायया यदवैदिकम् ॥
मयैव कल्पितं देवि जगतां नाशकारणात् ।
मदाज्ञया जैमिनिना पूर्वं वेदमपार्थकम् ॥
निरीश्वरेण वादेन कृतं शास्त्रमहत्तरम् ॥
शास्त्राणि चैव गिरिजे तामसानि निबोध मे ॥
अ०२३५।२-१३॥

मात्स्यं कौर्मं तथा लैङ्गं शैवं स्कान्दं तथैव च ।
आग्नेयं च षडेतानि तामसानि निबोध मे ॥१८॥
गौतमं बार्हस्पत्यं च साम्बर्तं च यम स्मृतम् ।
सांख्यं चोशनसं चेति तामसा निरयप्रदाः ॥२६॥

इसी प्रकार मत्स्य, कर्म, लिंग, शिव, स्कन्द पुराण को तामसी कहा है, तथा गौतम बृहस्पति, सम्बर्त, यम, सांख्य और उशना-स्मृति को तामस और नरक देने वाली कहा है इसी प्रकार २३५ अध्याय मुद्रित पद्मपुराण के ५ श्लोक में "शंख चक्रोर्ध्वपुंड्रादिचिह्नैः प्रियतमैर्हरेः । रहिता ये द्विजा देवि ते वै पाखंडिनः स्मृताः" । जो शंख चक्र से रहित ब्राह्मण को पाखण्डी कहा है तथा भस्मधारी को पाखंडी कहा है मेरी समझ में जहाँ कहीं पुराणों में इस प्रकार के सम्प्रदाय द्वेष सूचक श्लोक पाये जायं वे निश्चय ही आधुनिक और प्रक्षिप्त हैं इसमें कोई सन्देह नहीं और बुद्धिमान् उनको व्यासजी के निर्मित श्लोक नहीं मानते यही श्लोक इस बात की साक्षी देते हैं कि एक समय सम्प्रदाय द्वेष भी इतना बढ़ गया था कि पुराणों में प्रक्षिप्त श्लोक मिलाकर महानुभावों ने अपने चित्त का गुबार मिटाया ।"[११]

मिश्रजी के लेख से इस लम्बे उद्धरण देने के दो प्रयोजन हैं।

११ वही, पृष्ठ १०५ से १०८ तक

एक तो पाठकों को स्वयं पुराणों की पुराणों के विषय में सम्मति ज्ञात हो जाय, और दूसरा मिश्रजी की प्रक्षिप्त जांचने की कसौटी का भी ज्ञान हो जाय। मिश्रजी ने जो कसौटी बतलाई है, उससे तो कोई भी पुराण प्रामाणिक नहीं ठहरेंगे क्योंकि वैष्णव पुराणों में विष्णु के अतिरिक्त अन्य सबकी अधीनता, शैव पुराणों में शिव से भिन्न सभी देवताओं की हीनता, देवी सम्बन्धी पुराणों में देवी को ही सबसे श्रेष्ठ बतलाते हैं। मिश्रजी को यदि वैष्णवगण यही कहें कि "शिवोत्कर्ष सूचक उनके तिलक, छाप के निन्दित वाक्य पुराणों में आधुनिक और प्रक्षिप्त हैं, इसमें सन्देह नहीं और यह कि बुद्धिमान् लोग इनको व्यासजी के निर्मित श्लोक नहीं मानते। यही श्लोक इस बात की साक्षी देते हैं कि एक समय सम्प्रदाय द्वेष भी इतना बढ़ गया था कि पुराणों में प्रक्षिप्त श्लोक मिला कर इन महानुभावों ने अपने चित्त का गुबार मिटाया।"

इसका मिश्रजी तथा श्रीमाधवाचार्य व श्री दीनानाथ के पास क्या समाधान है? इससे तो पुराण सारे ही आधुनिक जैसे दुग्ध और पानी का मिश्रण कर दिया जाय, तो वह शुद्ध दुग्ध नहीं रहता। ठीक इसी प्रकार पुराण में अपुराण (मिश्रजी के कथनानुसार वैष्णवों के मिश्रण किए हुए श्लोक पुराण नहीं) मिलकर पुराण तो हो ही नहीं सकता। जिस प्रकार जल मिश्रित दुग्धपान करने से नाना प्रकार के रोगों की सम्भावना रहती है, इसी प्रकार इस मिश्रित पुराणाभास के कारण आर्य जाति में विद्वेष, साम्प्रदायिक कलह प्रभृति नाना रोगों की उत्पत्ति एवं वृद्धि हो रही है, बुद्धिमानों

को इनका त्याग करके वेदों की शरण में जाना चाहिए।

पुनः मिश्रजी लिखते हैं—"लिखित पद्म पुराण के उत्तरखण्ड में २८२ अध्याय हैं और श्रीवेङ्कटेश्वर यन्त्रालय के मुद्रित पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में २५५ अध्याय हैं।"१२

केवल २७ अध्याय का भेद है, कुछ अधिक नहीं, क्योंकि २८२-२५५ = २७ है।

किन्तु मिश्रजी इसका समाधान करते करते गड़बड़ का एक और प्रमाण प्रस्तुत करते हैं:—"कहीं कहीं दो दो अध्यायों का एक एक अध्याय हो गया है कथा भाग में कोई भेद नहीं है और उसमें यह उत्तरखण्ड छठा है इस कारण थोड़ा सा विवरण यहां लिखते हैं।

प्रथम सृष्टि खण्ड इसमें सूची के अनुसार ८२ अध्याय हैं। दूसरा भूमिखण्ड इसमें सूची के अनुसार १२५ अध्याय हैं। तीसरा स्वर्ग-खण्ड यह पीछे लिखी सूची के अनुसार नहीं है इस कारण इसके अध्याय क्रम लिखते हैं।"१३

अतः मिश्रजी के "पद्मपुराण" में तथा श्रीवेङ्कटेश्वर यन्त्रालय, बम्बई में मुद्रित "पद्मपुराण" में महदन्तर है और मिश्रजी का और श्रीवेङ्कटेश्वर यन्त्रालय, बम्बई का पुराण, पूना के आनन्दाश्रम से मुद्रित पुराण से सर्वथा भिन्न है।

विष्णु पुराण

प्रचलित विष्णु पुराण की सूची पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र अपनी

---

१२ वही, पृष्ठ १०८

१३ वही, पृष्ठ १०८-१०९

गुरु विरजानन्द दण्डी सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 2867 ....
दयानन्द ... कुरुक्षेत्र

पुस्तक "[illegible] पृष्ठ [illegible]११ से ११५ तक देकर पुनः पृष्ठ ११५ पर लिखते हैं कि:—

"परिडत लोग इसकी श्लोक संख्या २३००० कह कर जानते हैं।"

नारदपुराण में दिया हुआ विष्णु पुराण का विषयानुक्रम देकर मिश्रजी पृष्ठ ११९ में लिखते हैं:—"तदनन्तर नारदपुराण में जो विषयानुक्रम दिया गया है वह भी यथायोग्य वर्णित देखा जाता है, किन्तु प्रधान झगड़ा श्लोक संख्या पर है, २३००० में से अध्यापक विलसन साहब ने ७००० श्लोक पाए हैं, उन्होंने विष्णु धर्मोत्तर को विष्णु पुराण का उत्तर भाग नहीं गिना है, इससे ही ज्ञात होता है कि उतने न्यून श्लोक पाये हैं, किन्तु उद्धृत नारद पुराणीय वचन, इसके अतिरिक्त अलवेरुणी की उक्ति पाठ करने से विष्णुधर्मोत्तर को विष्णु पुराण का उत्तर भाग कह कर ग्रहण करने में कोई दोष नहीं आता, प्रचलित विष्णु पुराण और विष्णु धर्मोत्तर एकत्र करने से १६००० से अधिक श्लोक नहीं पाये जाते, इसमें भी न्यूनाधिक सात सहस्र ७००० कम पड़ते हैं, इतने श्लोक कहाँ गए ? उसका निर्णय करना हमारी क्षुद्र बुद्धि के अगम्य है, तथापि प्रचलित धर्म्मोत्तर पूरा ग्रन्थ नहीं ज्ञात होता। नारद पुराण में जो लक्षण लिखे हैं, वह सब लक्षण भी प्रचलित विष्णुधर्म में नहीं पाये जाते, जिस विष्णुधर्म का ज्योतिषांश लेकर ब्रह्मगुप्त ने ब्रह्म सिद्धान्त रचना की, नारद पुराण में उसका परिचय होने पर भी प्रचलित धर्म्मोत्तर में उसके अधिकांश का अभाव है।"

वास्तव में विष्णु पुराण में से १६००० हजार श्लोक गुम हैं किन्तु विष्णु धर्म्मोत्तर भी उसका हिस्सा है, इससे उसकी कमी पूरी करो। उससे भी त्रुटि पूरी न हुई वरन् सात सहस्र की कमी है। इसीसे विष्णु पुराण की दशा का अनुमान लगाया जा सकता है।

पुनः मिश्रजी कन्याकृष्ण माहात्म्य, विष्णु शतनाम स्तोत्र, सिद्धलक्ष्मी स्तोत्र आदि माहात्म्यों और स्तोत्रों के सम्बन्ध में उनका नाम लेकर पृष्ठ ११९-१२० में लिखते हैं—

"....इत्यादि छोटी छोटी पोथी विष्णु पुराण के अन्तर्गत कह कर प्रचलित देखी जाती हैं, किन्तु इन सबके देखने से ही उन पोथियों की विष्णु पुराण के पीछे की रचना ज्ञात होती है।

हेमाद्रि और स्मृतिरत्नावलीकार ने बृहद्विष्णु पुराण से श्लोक उद्धृत किये हैं, किन्तु यह पुराण इस समय नहीं पाया जाता। सुना है कि काठियावाड़ में किन्हीं के घर पूरा २३००० का विष्णु पुराण है। मिलने पर उसका उल्लेख किया जायगा।"

मिश्रजी तो परलोकवासी हो गए और काठियावाड़ का पता भी नहीं दिए। वास्तव में मिश्रजी ने पुराणों की रक्षा के लिए यह गप्प हाँक दी। यदि कहीं ऐसा होता तो पुराणों के प्रबल समर्थक मिश्रजी अवश्य ही वहाँ से पुस्तक ले आते अथवा मँगवा लेते।

वायु पुराण व शिव पुराणः—

महापुराणगणना प्रसंग में देवी भागवत, नारद तथा मत्स्य पुराणों में 'शिव पुराण' का नाम नहीं है, उसके स्थान में 'वायवीय

पुराण' नाम आता है। देवी भागवत में इसकी संख्या २४६०० श्लोक बताई है यथा—

"·····वायव्यं षट् शतानि च। चतुर्विंशतिसंख्यातः सहस्राणि शौनक।—[देवी भागवत, स्कन्ध १, अ० ३, श्लोक ७]

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र अपनी पुस्तक "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ १२० में लिखते हैं:—"कोई कहता है शैव और वायु पुराण एक हैं, और कोई कहता है कि शैव और वायु भिन्न हैं। विष्णु, पद्म, मार्कण्डेय, कौर्म्म, वराह, लिङ्ग, ब्रह्मवैवर्त्त, भागवत और स्कन्दपुराण में "शिव" तथा मत्स्य, नारद और देवी भागवत में शैव के स्थान "वायवीय का" और मुद्गल पुराण में शिव और वायु दोनों का उल्लेख है।"

इससे तो पुराणों में स्पष्ट मतभेद ज्ञात होते हैं। कदाचित कोई यह कह दे कि शिव पुराण का दूसरा नाम वायु पुराण है और वायु और शिव पुराण एक ही ग्रन्थ हैं। एक ही ग्रन्थ के दो नाम होना कोई आश्चर्य की बात नहीं किन्तु मुद्गल पुराण की बात का क्या समाधान है जो दोनों का उल्लेख करता है ?

वायु पुराण, नारदादि पुराण के प्रमाण देकर मिश्रजी पृष्ठ १२३ में लिखते हैं:—

"नारदीय पुराण में जिस प्रकार वायु पुराण की अनुक्रमणिका है, इसके साथ रेवाखण्ड वर्णित वायु या शैव का विशेष पार्थक्य नहीं है, तथापि रेवा में गया माहात्म्य का प्रसंग नहीं यह भेद है। फिर नारद पुराण कहता है कि पूर्व भाग में ही गया माहात्म्य है

किन्तु दुर्भाग्य क्रम से स्वतन्त्र आकार में ही हमने वायु पुराणीय गया माहात्म्य और रेवानर्मदा माहात्म्य पाया है, किन्तु एकत्र रेवा माहात्म्य वर्णित चार पर्वयुक्त वायु पुराण का सन्धान ही नहीं पाया जाता।"

एक बात लिख कर पुनः उसी का खण्डन कर देना मिश्रजी का ही कार्य है। पहिले तो आडम्बर से लिख दिया कि "विशेष पार्थक्य नहीं" फिर पार्थक्य की बात भी कह डाली। इससे स्पष्ट सिद्ध हुआ कि शिव पुराण तथा वायु पुराण एक ग्रन्थ के दो नाम नहीं, अपितु ये दोनों पृथक् पृथक् ग्रन्थ हैं और ये अपने शुद्ध वास्तविक रूप में भी नहीं मिलते।

पुनः आप पृष्ठ १२३ में लिखते हैं कि:—"कलकत्ते की एशियाटिक सोसाइटी से एक वायु पुराण नामक पुस्तक बाहर हुई है। किन्तु उसमें चार पर्व अथवा पूर्व भाग में गया माहात्म्य नहीं है। सम्पादक ने अपनी इच्छा से इसके अन्त में गया माहात्म्य लगा दिया है। उसको छोड़ शिव संहिता वा रेवा माहात्म्य कोई बात नहीं। बम्बई और कलकत्ते में शिव पुराण छपा है। क्रम से उसमें भी हमने ऐसे पूर्वोत्तर और चार पर्व नहीं देखे।"

अर्थात् कलकत्ता का मुद्रित वायु पुराण भी वायु या शिव पुराण नहीं। मिश्रजी ने "ब्रह्माण्ड पुराण" के प्रसङ्ग में इसे "ब्रह्माण्ड पुराण" सिद्ध करने की चेष्टा की है। मेरा तात्पर्य इस उद्धरण से इतना ही है कि मिश्रजी की सम्मति में शिव पुराण या वायुपुराण का अस्तित्व एवं व्यक्तित्व सन्दिग्ध है। आगे शिवपुराण

की वायु संहिता के प्रमाण से शिवपुराण की विद्येश्वर, रौद्र, विनायक औम, मातृ, रुद्रैकादश, कैलास, शतरुद्र, कोटीरुद्र, सहस्रकोटी-रुद्र, वायुप्रोक्त तथ धर्म ये बारह संहिताएँ और उनके कुल एक लक्ष श्लोक बताकर मिश्रजी पृष्ठ १२५-१२६ पर लिखते हैं:—

"ऊपर जो बारह संहिता कही गई हैं, उक्त द्वादशसंहितायुक्त पुराण इस समय प्रचलित नहीं है। रौद्र संहिता, विनायक संहिता, मातृ संहिता और चार प्रकार की रुद्र संहिता यह कई संहिता मुद्रित शिव पुराण में नहीं है। बम्बई में जो शिव पुराण छपा है उसमें विद्येश्वर, औम वा ज्ञान, कैलास, वायवीय और धर्म यह कई संहिता और सनत्कुमार नामक एक अतिरिक्त संहिता है। नारद पुराण में उक्त रुद्र संहिता समूह ही ज्ञात होता है, कि शिव संहिता नाम से अख्यात है। और नर्मदा महात्म्य उक्त किसी संहिता के अन्तर्गत है। माघमहात्म्य और दूसरे मास-महात्म्य स्वतन्त्र पाये जाते हैं, किन्तु किसी शिव पुराण में नहीं पाये जाते।"

अर्थात् स्वयं शिव पुराण का जो अपना लक्षण बतलाता है, वह तो प्रचलित शिव पुराण में है नहीं। हाँ, नारद पुराण का, कदाचित् मिल जाय। ब्रह्म पुराण के प्रसङ्ग में तो मिश्रजी ने ब्रह्म पुराण के सम्बन्ध में दूसरे पुराण की तुलना में ब्रह्म पुराण की सम्मति का आदर किया था। यहाँ शिव पुराण के सम्बन्ध में शिव पुराण की सम्मति का निरादर क्यों किया है? जब शिव पुराण का प्रचलित शिव पुराण का वचन उसके अपने सम्बन्ध में

ही प्रमाणित नहीं, तो अन्य विषयों में उसकी प्रामाणिकता कैसे स्वीकार की जायेगी ? मिश्रजी की अन्तिम बात बड़े महत्व की है, मिश्रजी के कहने का तात्पर्य स्पष्ट है कि माघ आदि मासों के महात्म्य किसी ने गढ़ कर शिव पुराण के नाम से चला दिए हैं।

पृष्ठ १३५–१३६ में मिश्रजी लिखते हैं कि:—

"जो शिव पुराण छपा है, उसकी श्लोक संख्या प्रायः १८००० है, किन्तु इसमें भी वायु संहिता वर्णित अनेक संहिता नहीं हैं, ज्ञात होता है सब संहिता एकत्र होने पर २४ हजार से अधिक हो सकती है। तथापि जो इस संहिता में बारह संहिता युक्त शिव पुराण के लक्ष श्लोकों की बात लिखी है वह माहात्म्य सूचक परिवर्त्ती काल की योजना ज्ञात होती है। रेवा माहात्म्य में जो पूर्वोत्तरभाग और पञ्चपर्वात्मक शिव पुराण का उल्लेख है यही संभवतः २४००० श्लोकात्मक शिव पुराण है।"

आपकी बात मान भी ली जाय फिर भी पुराण की वास्तविकता का पता नहीं चलता। ऊपर के उद्धरण के आगे आप पृष्ठ १३६ में लिखते हैं:—

"इस समय में गया माहात्म्ययुक्त वा द्वादश संहितात्मक शिव पुराण नहीं पाया जाता। गया माहात्म्य किस प्रकार शिव पुराण संयुक्त में हुआ यह बात जानना कठिन है।"

मिश्रजी, अभी तो बता आये कि माहात्म्य सूचक भी परिवर्त्ती-काल की योजना है, लोगों ने पीछे से मिला दिए; किन्तु एक गया माहात्म्य के मिश्रण से आप क्यों चिन्तित हुए ?

आप इसके सम्बन्ध में पृष्ठ १३७–१३८ में लिखते हैं:—

"कोई कहते हैं इन ग्रन्थ में विष्णु माहात्म्य वर्णन है। गया में जब बुद्ध का प्रभाव ध्वंस हुआ और विष्णु भगवान् का प्रभाव जब फिर विस्तृत हुआ तब बौद्धरूपी गयासुर के ऊपर विष्णुरूपी गदाधर के पादपद्म स्थापन हुए तब इस माहात्म्य की विशेष वृद्धि हुई, गयाक्षेत्र यद्यपि वेद प्रतिपाद्य है और वाल्मीकि रामायण में भी इसका उल्लेख है परन्तु बौद्ध प्रादुर्भाव के उपरांत जब उनका समय हीन हुआ तब धर्मग्रन्थों में बहुत कुछ उलट फेर हो गया। अपने अपने सम्प्रदाय के माहात्म्य सूचक बहुत से प्रक्षिप्त श्लोक धर्मग्रन्थों में मिला दिये गए और उनको पुराणों में मिलाने की चेष्टा हुई। ऐसे ही गया माहात्म्य वायु पुराणों में मिलाने की चेष्टा हुई थी परन्तु वह उनके साथ सम्मिलित न हुआ।"

मिश्रजी ने इस मत का खण्डन नहीं किया। आप असंदिग्ध शब्दों में धर्मग्रन्थों एवं पुराणों में उलटफेर का होना स्वीकार करते हैं शिव पुराण भी उससे अछूता नहीं रह सका।

इसके आगे मिश्रजी पृष्ठ १३८ में लिखते हैं:—

"मुद्रित शिव पुराण में बारह संहिता नहीं पाई जाती परन्तु एकादशरुद्र, कोटिरुद्र, शतरुद्र प्रभृति संहिता स्वतंत्र पायी जाती हैं।"

पुनः पृष्ठ १३९ में मिश्रजी लिखते हैं:—

"निम्नलिखित छोटी छोटी पोथी शिव पुराण के अन्तर्गत पाई जाती हैं, अविमुक्त माहात्म्य, आदिचिदम्बर माहात्म्य, ज्येष्ठ ललिता

व्रत, तृतीयाव्रत, बदरीवन माहात्म्य, बिल्ववन माहात्म्य, भौम संहिता, मयूरपुर माहात्म्य, व्यास पूजन संहिता, साध्यसाधन खण्ड, हेमसभानाथ माहात्म्य, परन्तु यह ग्रन्थ पुराण रचना के पीछे के हैं।"

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्रजी ने इस गोलमाल का उत्तरदायित्व बौद्धों पर डाला है। वे आगे पृष्ठ १३९ में लिखते हैं:—

"....बौद्धों ने हमारे धर्म ग्रन्थों को इतना नष्ट भ्रष्ट किया था कि उनके पीछे वे ग्रन्थ अपना असली स्वरूप प्राप्त न कर सके।"

शिव पुराण, वायु संहिता, खण्ड १ में:—

"तदेव लक्षमुद्दिष्टं शैवं शाखाविभेदतः।
पुराणं वेदसारं तद् भुक्तिफलप्रदम्॥"

इस श्लोक में शिव पुराण में एक लक्ष श्लोक बतलाए हैं किन्तु आजकल केवल २४१७८ श्लोक मिलते हैं। इससे मुक्ति साधन के लिए इसका आश्रय लेना कितना भयावह होगा विज्ञ पाठक अनुमान कर सकते हैं।

इस पुराण ने तो असत्य भाषण के लिए भी उपदेश दिया—

"असत्यमपि शस्तं स्यादापदीत्यनुशासनम्।"

—[शिवपुराण विद्येश्वर संहिता अ० ७, श्लोक २५]

पुराण कर्त्ता आपत्काल में असत्यभाषण की प्रेरणा करता है जिस असत्यभाषण से बढ़कर कोई पाप नहीं। पुराणों को वेदानुकूल सिद्ध करने वाले पौराणिक वेद से भी असत्यभाषण की अनुमति देने वाला कोई वाक्य प्रदर्शित कर सकते हैं?

वाराह पुराणः—

वाराह पुराण की श्लोक संख्या के सम्बन्ध में पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र अपनी पुस्तक "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ २९० में लिखते हैं:—

मत्स्य पुराण के मत से—

"महावराहस्य पुनर्माहात्म्यमधिकृत्य च ।
विष्णुनाभिहितं क्षोण्यै तद्वाराहमिहोच्यते ॥
मानवस्य प्रसंगेन कल्पस्य मुनिसत्तमाः ।
चतुर्विंशत् सहस्राणि तत्पुराणमिहोच्यत ॥"

जिस ग्रन्थ में मानव कल्प प्रसंग में विष्णु द्वारा पृथिवी के समक्ष में महावराह का माहात्म्य विवृत हुआ है वह २४००० श्लोक युक्त पुराण वाराह नाम से विख्यात है।"

थोड़ा आगे चल कर आप पृष्ठ २९० में ही लिखते हैं:—

"यह वराह पुराण एशियाटिक सोसाइटी से मुद्रित हुआ है, इसकी श्लोक संख्या, १०७०० है।"

आचार्य श्री रामदेवजी बी० ए० व पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार, मीमांसातीर्थ लिखते हैं:—

"मात्स्य तथा बृहन्नारद के अनुसार वराह महापुराण में केवल २४ सहस्र श्लोक संख्या है। परन्तु वर्त्तमान वराह पुराण में १०८९९ ही पद्य हैं शेष का पता नहीं।"[१४]

---

[१४] "१४ पुराण-मत-पर्यालोचन" प्रथम संस्करण, पृष्ठ २९५.

"वाराह पुराण" कल्याण नगरी (बम्बई) में श्री कृष्णदास पुत्र गंगाविष्णु के लक्ष्मी वेङ्कटेश्वर मुद्रणालय में पं० शिवदुलारे वाजपेयी मैनेजर ने विक्रमी संवत् १९८० और शकाब्द १८४५ में अध्यक्ष के लिए मुद्रित करके प्रकाशित की। इसमें २३९ पृष्ठ हैं। १०३४३ १/२ श्लोक हैं। और यदि २१८ वें अध्याय के भी ४९ श्लोक जोड़ लिए जायँ तो १०३९२ १/२ श्लोक होते हैं।

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र की दृष्टि में यह पुराण संदिग्ध है। आप अपनी पुस्तक के पृष्ठ २८७–२८८ में लिखते हैं:—

"ऊपर जो वराह पुराण की सूची दी हुई है, वही इस समय प्रचलित और मुद्रित देखी जाती है। यह गौड सम्मत वराह है। इसके अतिरिक्त दाक्षिणात्य में विरल प्रचार और एक वराह पाया जाता है। एक विषयक होने पर भी गौड़ीय रामायण और दाक्षिणात्य रामायण में जिस प्रकार बहु पाठान्तर और अध्यायान्तर देखे जाते हैं, इन दो वराह में भी उसी प्रकार पाठान्तर दीखते हैं। एक विषयक वर्णना में अनेक स्थल में ऐसे भिन्नरूप श्लोक पाए जाते हैं जिससे देखने से ही भिन्न श्रेणी का ग्रन्थ और दूसरे का निर्मित बोध होता है। बर्लिन के राज पुस्तकालय की तालिका में भी इस पुस्तक का सन्धान पाया गया है। दोनों पुस्तकों में अध्याय, संख्या और पाठ का मेल न होने पर भी एक ही विषय की आलोचना है।

अब सन्देह यह है कि उपरोक्त विवरणमूलक वाराह को आदि वाराह पुराण में गिना जाय या नहीं ?"

पुनः पृष्ठ २९० में आप लिखते हैं:—

"नारदीय के लक्षण के साथ प्रचलित वाराह का बहुत सा मेल होने पर भी मानव कल्प प्रसंग में महावराह का माहात्म्य वर्णित नहीं है। अथवा इस ससय वाराह में बहुत से व्रतादि का उल्लेख है। प्राचीन वाराह में अथवा नारदीय पुराण के संकलन काल में जो वराह प्रचलित था, उसमें यह सम्पूर्ण था वा नहीं सन्देह है।"

वाराह पुराण में व्याकरण विरुद्ध प्रयोगः—

इस पुराण में अनेक स्थलों पर व्याकरण विरुद्ध शब्द और पिङ्गल प्रतिकूल पदों का प्रचुर प्रयोग हुआ है। अलङ्कारों में तो प्रसिद्ध प्रसिद्ध उपमा, उत्प्रेक्षा तक का नामोनिशान नहीं। भागवतादि की भाँति इसमें न भाव है न भाषा।

"नाभिं विष्णुस्तु मे पातु उदरं मधुसूदनः।
उरस्त्रिविक्रमः पातु हृदयं पातु वामनः ॥१।२६॥
केन मंत्रविधानेन प्राशनं ते प्रदीयते।
व्रतस्य चोपचारेषु अर्चयित्वा यथाविधि ॥११४।२८॥
केऽत्र भुंजन्ति तद्देव सर्वशुद्धिकरं परम्।
ये तु एकाशिनो देवमुपसर्पन्ति माधवम् ॥११४।३०॥"

उपर्युक्त श्लोकों के रेखाङ्कित पदों में पद्य में नित्यसन्धि का नियम होने से असन्धि दोष है।

"लब्ध्वा तु शोभनां मूर्त्तिं हिमवन्तगृहे शुभाम्।

पुनस्तपश्चकारोग्रं देवं स्मृत्वा त्रिलोचनम् ॥२२।६॥
एवं स सकठं मत्वा व्याधः किंचिन्न भक्षयत् ॥४८।५॥
चातुर्वर्ण्यस्य कर्माणि यत्त्वया परिपृच्छितम् ॥१५।४०॥
सुमनो गन्धसम्भूतं यत्त्वया पूर्व पृच्छितम् ॥१२३।४२॥
आज्ञप्तमनु चिन्तयित्वा भगवन्नागच्छ ॥१२७।४५॥
तां गति सम्प्रपद्ये ऽहं यद्यहं न गमे पुनः ॥१३६।५५॥"

वैयाकरण सम्यक देखलें, ऊपर के रेखाङ्कित पद सन्धि-तिङन्त कृदन्त-समास-प्रकरणों के अशुद्ध प्रयोग हैं या नहीं ?

लिङ्ग पुराणः—

विष्णु पुराण के मत से अष्टादश महापुराणों में लिङ्ग पुराण ग्यारहवां है। नारद, श्रीमद्भागवत, शिव पुराण, वराह, मत्स्य, पद्म, ब्रह्मवैवर्त्त तथा स्वयं लिंग पुराण का भी ऐसा ही मत है। कूर्म पुराण की दृष्टि से यह दसवाँ है, देवी भागवत की दृष्टि से यह पन्द्रहवाँ है। किन्तु मार्कण्डेय पुराण की दृष्टि से यह महापुराण नहीं। बहु सम्मति से इसका महापुराण होना सिद्ध हो जाता है।

वर्तमान लिङ्ग पुराण वास्तविक नहीं।

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र अपनी पुस्तक "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ २७९ में लिखते हैं:—

"मत्स्य पुराण के मत से—

"यत्राग्नि लिङ्गमध्यस्थः प्राह देवो महेश्वरः।

धर्मार्थ काममोक्षार्थमाग्नेयमधिकृत्य च ॥
कल्पान्तं लिङ्गमित्युक्तं पुराणं ब्रह्मणा स्वयम् ।
तदेकादशसाहस्रं फाल्गुन्यां यः प्रयच्छति ॥"

जिस ग्रन्थ में देव महेश्वर ने अग्नि लिंगमध्यस्थ होकर अग्नि कल्पान्त में धर्म, अर्थ, काम और मोक्षार्थ कथा प्रकाश की थी, एकादश सहस्रयुक्त वह पुराण ही ब्रह्मा द्वारा लिंग नाम से वर्णित हुआ है ।"

नारद पुराण में यह अग्निकल्प, सम्बन्धी कहा गया है—

"यच्चालिंगाभिधं तिष्ठन् वह्निलिंगे हरोऽभ्यधात् ।
मह्यं धर्म्मादि सिध्द्यन्तं अग्निकल्पकथाश्रयम् ॥१५॥

फिर शिव पुराण के उत्तरखण्ड में लिखा है:—

"लिङ्गस्य चरितोक्तत्वात् पुराणं लिङ्गमुच्यते ।"

लिङ्ग का चरित वर्णित होने से 'लिङ्ग पुराण' नाम हुआ है। प्रचलित 'लिङ्ग पुराण' में ही लिखा है—

"ईशानकल्प वृत्तान्तमधिकृत्य महात्मना ।
ब्रह्मणा कल्पितं पूर्वं पुराणां लैङ्गमुत्तमम् ॥"(२-१)

ईशान कल्प वृत्तान्त प्रसंग में पूर्वकाल में महात्मा ब्रह्मा द्वारा जो पुराण कल्पित हुआ था उसका नाम लैंग है।

इससे स्पष्ट सिद्ध है कि मत्स्य पुराण तथा नारद पुराण को जो लिङ्ग पुराण ज्ञात था, वह प्रचलित लिङ्ग पुराण से अवश्य भिन्न

१५ "अष्टादशपुराणदर्पण" पृष्ठ २७९ में उद्धृत नारद पुराण का वचन

था। यह बात पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र को खटकी तो वे पृष्ठ २८२ में लिखते हैं:—

"पूर्व में ही कह चुके हैं कि मत्स्य और नारदीय मत से अग्नि-कल्प प्रसंग में लैङ्ग पुराण और ईशान कल्प प्रसंग में अग्नि पुराण वर्णित हुआ है, मत्स्य पु० ५३ अ० ऐसे स्थल में ईशानकल्पाश्रयी लैंग एक है वा नहीं, अधिक सम्भव है बौद्ध प्रभाव खर्व और ब्रह्मण्य प्रभाव के अभ्युदय के साथ जब पुराणों का पुनः संस्कार होता था, उस समय आग्नेय पुराणोक्त ईशानकल्प की कथा आकर लिंग पुराण में प्रविष्ट हुई और अग्निकल्प का प्रसंग संभवतः अग्निपुराण का विषयीभूत समझ कर लैङ्ग में अग्नि कल्प की कथा का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया।"

मिश्रजी ने केवल लिङ्ग पुराण का ही खण्डन नहीं किया वरन् साथ ही अग्नि पुराण को भी नकली बता दिया है। इतना ही नहीं आप और भी स्पष्ट पृष्ठ २८२ में लिखते हैं:—

"....तथापि परवर्त्ती काल में शैव लोगों के अभ्युदय में बीच बीच में शिव की प्रशंसा और विष्णु की कथा भी निवेशित हुई है। आदि पुराण समूह किसी किसी विशेष सम्प्रदाय की सामग्री होने पर भी उसमें सम्प्रदाय वा देवता विशेष की निन्दा की बात नहीं समझी जा सकती। सम्प्रदाय की द्वेषाद्वेषी में पुराणों में ऐसे विद्वेष-सूचक श्लोकावली बहुत पीछे प्रविष्ट हुई थी। ऐसे स्थल में सामान्य प्रक्षिप्त श्लोक समूह छोड़ देने पर इस लिङ्ग पुराण को एक अति प्राचीन पुराण कहा जा सकता है।"

मिश्रजी ने यहाँ एक चालाकी करने का प्रयत्न किया है। विष्णु की निन्दा न लिख कर "विष्णु की कथा" शब्द लिखते हैं जिससे जनता यह समझे कि विष्णु की कथा उत्कर्ष द्योतक कथा इस पुराण में है, किन्तु इनकी पूर्वापर वाक्यरचना ने इनकी चालाकी का रहस्योद्घाटन कर दिया है। क्या ही अच्छा होता, यदि मिश्रजी "प्रक्षिप्त श्लोकावली" यहाँ लिख देते। मिश्रजी ने पुराणों में प्रक्षेप तो स्वीकार कर लिया और इसका उत्तरदायित्व सम्प्रदायिकों को बतलाते हैं। मिश्रजी को इसी पर सन्तोष नहीं हुआ, इसके आगे पुनः पृष्ठ २८२ में ही लिखते हैं:—

"अरुणाचल माहात्म्य, गौरीकल्याण, पञ्चाक्षरमाहात्म्य, राम सहस्रनाम, रुद्राक्षमाहात्म्य, और सरस्वती इत्यादि कई छोटी-छोटी पोथी लिङ्ग पुराण के अन्तर्गत हैं। इसके अतिरिक्त वासिष्ठ लैंग नामक एक उप पुराण भी पाया जाता है। हलायुध का ब्राह्मण सर्वस्व में बृहल्लिंग पुराण से वचन उद्धृत हुआ है, किन्तु अब यह पुराण नहीं देखा जाता।"

इन उद्धरणों से स्पष्ट पता चला चलता है कि मिश्रजी को पुराणों के मण्डन के लिए यह स्वीकार करना पड़ा है, कि पुराणों में गड़बड़ है, पुराणों के कई श्लोक पुराणों में से निकल गए हैं, और कई और डाल दिए गए हैं। जब ऐसी अवस्था है तो इनमें प्रतिपादित धर्म वास्तविक पुराणों के कैसे हो सकते हैं?

इसलिए आर्य समाज की यह घोषणा ठीक है कि वेद को ही अपना धर्म ग्रन्थ मानें जिसमें सृष्टि से अब तक एक अक्षर का

भी भेद नहीं आया। †

ब्रह्माण्ड पुराणः—

यह राजस पुराण है। इसकी श्लोक संख्या में भिन्न भिन्न मत हैं।

"तच्च द्वादशसाहस्रं ब्रह्माण्डं द्विशताधिकम्।"

—[मत्स्यपुराण अ० ५३ श्लोक० ५४]

वही १२२०० श्लोकयुक्त ब्रह्माण्ड है।

यहाँ मत्स्य पुराण के मत से १२२०० श्लोक संख्या है।

आचार्य रामदेवजी बी० ए० व पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार लिखते हैं:—"इसकी पद्य संख्या १०२०० हैं।"१६

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र के मत—"प्रायः अधिकांश पुराणों के मत से ही ब्रह्माण्ड पुराण की श्लोक संख्या १२००० है।" १७

तीनों के मत भिन्न भिन्न हैं। इससे प्रकट होता है कि इस पुराण में भी हेरफेर अवश्य हुआ है।

इस पुराण के प्रति अध्याय तथा पाद की समाप्ति में इस पुराण को वायुप्रोक्त कहा गया है। अतः बहुत से पाश्चात्य व प्राच्य

---

† देखो, मेरी लिखी हुई "पाश्चात्यों की दृष्टि में वेद ईश्वरीय ज्ञान" पुस्तक (जयदेव ब्रदर्स, आत्माराम पथ, बड़ौदा द्वारा प्रकाशित)

१६ "पुराणमत-पर्यालोचन" पृष्ठ १०१

१७ "अष्टादश पुराणदर्पण" पृष्ठ ४११

विद्वान् 'वायुपुराण' तथा 'ब्रह्माण्ड पुराण' को एक दूसरे के बिम्ब प्रतिबिम्ब मानते हैं। एच. एच. विल्सन महोदय वायु पुराण का छाया ब्रह्माण्ड पुराण मानते हैं। श्री राजेन्द्रलाल मित्र तो १२००० श्लोक के ब्रह्माण्ड पुराण को ही 'वायु पुराण' के नाम से रॉयल एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता से प्रकाशित किया था। उनके मत का खण्डन करते हुए पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र अपनी पुस्तक अष्टादश पुराण दर्पण पृष्ठ ४११ में लिखते हैं:—

"राजा राजेन्द्रलाल द्वादश सहस्र श्लोकात्मक ब्रह्माण्डपुराण को वायु पुराण नाम से प्रकाश करके महाभ्रम में गिरे हैं।"

वास्तव दोनों पुराण अलग अलग हैं।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराणः—

इसके सम्बन्ध में लिखा है:—

"रथन्तरस्य कल्पस्य वृत्तान्तमधिकृत्य च।
सावर्णिना नारदाय कृष्णमाहात्म्यमुत्तमम्॥
यत्र ब्रह्मवराहस्य चरितं वर्ण्यते मुहुः।
तदष्टादश साहस्रं ब्रह्मवैवर्त्तमुच्यते॥"[१८]

रथन्तर कल्प के वृत्तान्त प्रसंग में जिस ग्रन्थ में सावर्णि ने नारद को कृष्ण माहात्म्य और ब्राह्मवराह का चरित विस्तृत भाव से वर्णन किया है, वही अठारह सहस्र ब्रह्मवैवर्त पुराण है।

शैवपुराण उत्तरखण्ड में लिखा है—

---

१८ वही, पृष्ठ २६७-२६८ (मत्स्यपुराण के वचन)

"विवर्त्तनाद् ब्रह्मणस्तु ब्रह्मवैवर्त्तमुच्यते ।"[१९]

ब्रह्मा के विवर्त्त प्रसंग के कारण इस पुराण को ब्रह्मवैवर्त्त कहा जाता है ।"

इस लक्षण के अनुसार वर्तमान में प्राप्त ब्रह्मवैवर्त्त पुराण वास्तविक पुराण नहीं है क्योंकि प्रथम इसमें रथान्तर कल्पनाम भी नहीं आता वर्णन तो दूर है ।

स्वयं पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र लिखते हैं:—

"मत्स्य शैव वा नारदोक्त लक्षण के साथ प्रचलित ब्रह्मवैवर्त्त की एकता नहीं है । रथन्तर कथन सावर्णि नारद सम्वाद ब्रह्म वराह का वृतान्त वा ब्रह्म का विवर्त प्रसङ्ग, इनमें से कोई भी प्रचलित ब्रह्मवैवर्त पुराण में नहीं पाया जाता। अधिक क्या नारद पुराण में जो चार खण्डों के नाम संक्षेप से विषयानुक्त में दिया गया है प्रचलित ब्रह्मवैवर्त इसी प्रकार चार खण्डों में विभक्त होने पर भी अनेक विषयों में नहीं मिलता । नारदोक्त ब्रह्मखण्डीय सृष्टि प्रकरण, नारद ब्रह्म विवाद, नारद की शिवलोक में गति और शिव से ज्ञानलाभ यह सब विषय इस समय के ब्रह्मवैवर्त्त में होने पर भी नारद और मुरीचिकागमन तथा सिद्धाश्रम में गमन और सावर्णिकी कथा एक काल में ही छोड़ दी गई है। इसी प्रकार नारदोक्त प्रकृति खण्ड में सावर्णि नारद सम्वाद और मुख्य रूप से कृष्ण माहात्म्य की कथा होने पर भी प्रचलित ब्रह्मवैवर्त्त में नहीं है

---

१९ वही, पृष्ठ २६८

गौण रूप से कृष्ण कथा है। किन्तु प्रकृति का माहात्म्य और पूजादि विस्तार से वर्णित हुई है।"२०

इस पुराण में आधुनिक बहुत से श्लोक प्रक्षिप्त हैं। स्वयं मिश्रजी इस बात का समर्थन करते हुए लिखते हैं:—

"... इस पुराण में ऐसे श्लोक निश्चय बहुत काल पीछे के हैं" 'यथा म्लेच्छात् कुविन्दकन्यायां जोला जातिर्बभूव ह' १०।१२१ म्लेच्छ के औरस से कुविन्दकन्या में जोला (जुलाहा) जाति उत्पन्न हुई है। बंगदेश में ही यह जाति जोला कहाती है तो यह अंश बंगदेश में ही सन्निविष्ट हुआ है तथा शंखचूड़ के युद्ध में राढीय और वारेन्द्र बंगाली नाम पाये जाते हैं।

हमारा इसमें यह कहना है कि यद्यपि ऐसे श्लोक इस पुराण में प्रक्षिप्त भी हों और इसका दूसरा संस्करण हुआ भी हो परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि कुछ थोड़े लौट बदल को छोड़ कर इसका क्रम कथाभाग आदि ब्रह्मवैवर्त पुराण का ही है।२१

पुनः—"दाक्षिणात्यों में एक ब्रह्मवैवर्त नाम पुराण प्रचलित है कोई कोई समझते हैं इस पुराण में ही बहुत से ब्रह्मवैवर्त के लक्षण हैं।"२२

इतने हेरफेर होने पर भी पौराणिकवर्ग इस ब्रह्मवैवर्त पुराण को वेद व्यास की रचना मानता है। आश्चर्य है !!

---

२० वही, पृष्ठ २७१

२१ वही, पृष्ठ २७३

२२ वही पृष्ठ २७३

अग्निपुराणः—

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र अपनी पुस्तक "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ २१८ में लिखते हैं:—

'मत्स्यपुराण में लिखा है—

"यत्तदीशानकं कल्पं वृत्तान्तमधिकृत्य च।
वसिष्ठायाग्निना प्रोक्तमाग्नेयं तत् प्रचक्षते॥
तच्च षोडशसाहस्रं सर्वक्रतुफलप्रदम्॥"

ईशानकल्प के वृत्तान्त प्रसंग में अग्नि ने वसिष्ठ के निकट जो पुराण कहा है, वही आग्नेय नाम से विख्यात है। वह १६००० श्लोक युक्त और सर्वयज्ञों का फल देने वाला है।

पृष्ठ २१९ में:—"नारद पुराणोक्त विषयानुक्रम इस समय के मुद्रित अग्निपुराण में पाया जाने पर भी उसमें ईशानकल्प वृत्तान्त अथवा मात्स्योक्त कोई लक्षण नहीं है।"

आगे आप इसी पृष्ठ पर लिखते हैं:—

"नारद पुराण का विषयानुक्रम और प्रचलित अग्नि पुराण की विषयसूची मिलाकर देखने से सरलता से ही ज्ञात होता है कि, ईशानकल्प और अग्नि वसिष्ठादि सम्वाद छोड़कर और सब कथा ही प्रचलित अग्नि पुराण में हैं। संभवतः यही अग्नि पुराण का संशोधित रूप है। इसमें थोड़ा ही अदल बदल हुआ है। इसकी ग्रन्थ संख्या कुछ अधिक १५००० है।....."

"बल्लालसेन के दान सागर में अग्नि पुराण से जो श्लोक उद्धृत हुए हैं उनमें से कई श्लोक इस वह्नि पुराण में पाए गए हैं,

किन्तु यह सब श्लोक प्रचलित अग्नि पुराण में नहीं पाये जाते।"

पं० जयदेव शर्मा विद्यालङ्कार व आचार्य रामदेवजी बी० ए० मानते हैं कि—"नारद पुराण के अनुसार इसी लक्षण वाला आग्नेय पुराण १५००० श्लोक संख्या वाला है।"[२३]

श्री नगेन्द्रनाथ वसु 'प्राच्यविद्या महार्णव' का मत है कि—"अग्नि ने वशिष्ठ के निकट ईशान कल्प के जिस वृत्तान्त को वर्णन किया था, उसी के विवरण पर अग्नि पुराण बना। इसकी श्लोक संख्या १०००० है।....."[२४]

मत्स्यपुराणकार १६०००, पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र १५०००, वसुजी १०००० श्लोक इस अग्नि पुराण के मानते हैं। तीनों के मत भिन्न भिन्न हैं और मिश्रजी इसमें हेरफेर मानते हैं।

नारद पुराण

यह महापुराण दो भागों में विभक्त है वर्त्तमान में उपलब्ध बृहन्नारदीय पुराण के प्रथम खण्ड में १२५ अध्याय हैं, द्वितीय जिसको उत्तर खण्ड कहा जाता है उसमें ८२ अध्याय हैं।

मत्स्य पुराण के अनुसार इसकी गणना:—

"पञ्चविंशत्सहस्राणि नारदीयं तदुच्यते।"[२३]"

[मत्स्य० अ० ३५]

---

२३ "पुराणमत-पर्यालोचन" पृष्ठ ३४६

२४ "हिन्दी विश्वकोष" प्रथम भाग, पृष्ठ ११२

२५००० श्लोकयुक्त नारद पुराण है।

अध्यापक विलसन साहब नारद पुराण के ३००० श्लोक मानते हैं। परन्तु पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र, विलसन साहब के मत की आलोचना करते हुए अपनी पुस्तक के पृष्ठ १९९ में लिखते हैं कि:—

"नारदीय पुराण की ग्रन्थ संख्या प्रायः २२००० है।"

पुनः पृष्ठ २०० पर लिखते हैं:—उन पुराणों के पश्चात् ही इसका संकलन हुआ है।....यह भी संभव है कि इस पुराण का अधिकांश प्राचीन अंश ही विलुप्त हुआ है।"

पृष्ठ २०१ में मिश्रजी की दृष्टि में—"बृहन्नारदीय पुराण नाम से भी एक वैष्णव ग्रन्थ मुद्रित हुआ है वह महापुराण नहीं है उपपुराण में गिना जा सकता है। लघुबृहन्नारदीय नाम की भी छोटी पोथी पाई जाती है पर वह पुराण वा उपपुराण श्रेणी में नहीं गिनी जा सकती।

कार्तिक माहात्म्य, दत्तात्रेय स्तोत्र, पार्थिवलिंग माहात्म्य, मृग-व्याधकथा, यादव गिरिमाहात्म्य, श्रीकृष्ण माहात्म्य, संकट गणपति स्तोत्र इत्यादि नामों की कई पोथिएँ नारद पुराण के नाम से प्रचलित हैं।"

उपरोक्त प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि समस्त नारदीय पुराण बहुत अर्वाचीन काल का संग्रहीत तथा साम्प्रदायिक ग्रन्थ है। मत्स्य पुराणकार इसकी श्लोक संख्या २५०००, विलसन साहब ३००० और मिश्रजी केवल २२००० ही मानते हैं।

सम्प्रति जो "नारद पुराण" उपलब्ध है उसमें पूर्वोत्तर खण्ड दोनों को मिला कर कुल १७९०४ श्लोक संख्या है। शेष श्लोक पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र, श्री माधवाचार्य, श्री दीनानाथ शास्त्री व श्री कालूराम शास्त्री के घर में होगी।

मार्कण्डेय पुराण:—

मार्कण्डेय पुराण के विषय में मत्स्य पुराण में लिखा है कि:—

"यत्राधिकृत्य शकुनीन् धर्मान् धर्मविचारणा।
व्याख्याता वै मुनिप्रश्ने मुनिभिर्धर्म्मचारिभिः॥
मार्कण्डेयेन कथितं तत्सर्वं विस्तरेण तु।
पुराणं नवसाहस्रं मार्कण्डेयमिहोच्यते॥"

[मत्स्य पु० ५३। २६]

"जो ग्रन्थ धर्माधर्म विचारज्ञ पक्षियों के प्रसंग में आरम्भ होकर धार्मिक मुनिगण द्वारा कहा गया है और सब विषय मुनि प्रश्नानुसार में मार्कण्डेय द्वारा कहे गए हैं, वही ९००० ग्रन्थ युक्त मार्कण्डेय पुराण है।

शिवपुराण उत्तर खण्ड में भी लिखा है:—

"यत्र वक्ताऽभवत्खण्डे मार्कण्डेयो महामुनिः।
मार्कण्डेय पुराणं हि तदाख्यातं च सप्तमम्॥"

"हे खण्डे! जिस पुराण में महामुनि मार्कण्डेय वक्ता हुए थे वही सप्तम मार्कण्डेय पुराण नाम से आख्यात है।

परन्तु वर्तमान उपलब्ध मार्कण्डेय पुराण की पद्य संख्या अध्यापक विलसन साहब के मतानुसार ६९०० है।

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र लिखते हैं:—"बड़े ही आश्चर्य का विषय है। इस पुराण सम्पर्क में वेद व्यास का नाम नहीं।"[२५]

"मार्कण्डेय पुराण का वक्ता द्रोणतनय पक्षि है। यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाय तो प्राचीनकाल में इस मार्कण्डेय पुराण का वास्तविक अंश ४५ अध्याय से लेकर, ८० अध्याय तक तथा ९५ अध्याय से लेकर १३८ अध्याय तक होना चाहिए। क्योंकि इतना ही भाग मार्कण्डेय ऋषि ने क्रोष्टुकि के प्रति कहा है। शेष सब आख्यान संवादादि अन्य संस्करणों को लक्षित करते हैं।"[२६]

स्कन्द पुराण:—

सबसे बृहत् स्कन्द पुराण है। मत्स्य पुराण के अनुसार:—

"यत्र माहेश्वरान् धर्म्मानधिकृत्य च षण्मुखः।
कल्पेतत्पुरुषेवृत्तं चरितैरुपबृंहितम्॥
स्कान्दं नाम पुराणं तदेकाशीति निगद्यते॥"

"जिस पुराण में षडानन (स्कन्द) ने तत्पुरुष कल्प प्रसंग में अनेक चरित और उपाख्यान तथा माहेश्वर निर्दिष्ट धर्म प्रकाश किए हैं वही मर्त्यलोक में ८११०० स्कन्द पुराण नाम से विख्यात हुआ है।

---

२५ "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ २०७

२६ "पुराण-मत पर्यालोचन" पृष्ठ ३१३

स्कन्द पुराण ६ संहिता और ५० खण्डों में विभक्त है, इसकी आदि संहिता का नाम सनत्कुमार, द्वितीय सूत संहिता, तृतीय शंकर संहिता, चतुर्थ वैष्णव संहिता, पंचम ब्रह्म संहिता और छठी सौर संहिता है।

इनकी ग्रन्थ संख्या सूत संहिता (१।२२।२४) के अनुसार निम्न लिखित है—

"सनत्कुमार संहिता की	ग्रन्थ संख्या	३६०००
सूत संहिता	,,	६०००
शंकर संहिता	,,	३००००
वैष्णव संहिता	,,	५०००
ब्राह्म संहिता	,,	३०००
सौर संहिता	,,	१०००
		,,
		८१०००

यह तालिका मिश्रजी की "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ २९२ से ली गई है। परन्तु मिश्रजी स्वयं पृष्ठ २९३ में लिखते हैं:—

"यह स्कन्द पुराण वेदव्यासकर्तृक सात भाग में विभक्त और ८११०० श्लोक युक्त है।"

आपने यहाँ १०० श्लोक बढ़ा कर लिखा है। ऐसा मतभेद क्यों?

पौराणिक पं० कालूराम शास्त्री, स्कन्द पुराण में क्षेपक मानते हैं। वे लिखते हैं:—

"·····इस समय इसमें कुछ श्लोक अधिक पाये जाते हैं परन्तु इसके श्लोकों की शैली प्राचीन और आर्ष है सम्भव है कि जो पाठ

अधिक है वह किसी पुराण या उपपुराण से लिया गया हो या क्षेपक हो।"२७

पौराणिक पं० माधवाचार्य शास्त्री की भी यही सम्मति है। वे लिखते हैं:—

"उपलब्ध स्कन्दपुराण में माहेश्वर धर्म्म प्रतिपादनात्मक लक्षण तो प्रायः घटता है, परन्तु श्लोक संख्या उल्लेख से अधिक पाई जाती है, जिसमें कुछ भाग पुराणान्तर का सम्मिलित हुआ प्रतीत होता है और शेष पश्चात्प्रक्षिप्त जान पड़ता है।"२८

पुनः—"जिन पुराणों में अधिकांश लक्षण घटते हों परन्तु पद्य-संख्या उल्लेख से भी अधिक (पुराणान्तर से मिली हुई किंवा प्रक्षिप्त) पाई जाती हो वे पुराण उपर्युक्त संज्ञा से पुकारे जाने चाहिएं। यथा—(१) स्कन्द और (२) ब्राह्म।"२९

आजकल एक नकली "सत्यनारायण व्रत कथा" मिलती है जिसमें साधु साह बनिया और लीलावती आदि कथायें हैं जिसको सुनाकर आजकल के पौराणिक भोली भाली जनता को मूर्ख बनाते हैं। उसके प्रत्येक अध्याय के अन्त में लिखा है—"इति श्री रेवाखण्डे, सत्यनारायण व्रत कथा, स्कन्दपुराणान्तर्गते....।"

परन्तु यह कथा "स्कन्द पुराण" रेवाखण्ड में नहीं है। पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र ने "अष्टादशपुराण दर्पण" पृष्ठ ३४३-३४२ में

---

२७ "पुराण धर्म" पूर्वार्द्ध, द्वितीय संस्करण, पृष्ठ १३१

२८ "पुराण दिग्दर्शन" द्वितीय संस्करण, पृष्ठ २७

२९ "वही" पृष्ठ ३२

"रेवाखण्ड" की सम्पूर्ण सूची दी है उसमें इस फर्जी सत्यनारायण व्रत कथा की कोई चर्चा नहीं है।

वामन पुराणः—

मत्स्य पुराण के मत सेः—

"त्रिविक्रमस्य माहात्म्यमधिकृत्य चतुर्मुखः।
त्रिवर्गभ्यधात्तच्च वामनं परिकीर्तितम्।
पुराणं दशसाहस्रं कूर्मकल्पानुगं शिवम्।"

—[मत्स्य पु० अ० ५३]

अर्थात्—"जिस पुराण में चतुर्मुख ब्रह्मा ने त्रिविक्रम वामन का माहात्म्य अवलम्बन करके त्रिवर्ग का प्रतिपादन किया है। वह १००० श्लोकसंख्या से युक्त वामन पुराण कहा जाता है जिसका प्रारम्भ कूर्म कल्प से किया गया है।"

नारद पुराण के मत सेः—

"शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि पुराणं वामनाभिधम्।
त्रिविक्रमचरित्राढ्यं दशसाहस्रं संख्यकम्॥
कूर्मकल्पसमाख्यातं वर्गत्रयकथानकम्।"
.....
पुलस्त्येन समाख्यातं नारदाय महात्मने।
ततो नारदतः प्राप्तं व्यासेन सुमहात्मना।
व्यासात्तु लब्धवान् वत्स तच्छिष्यो रोमहर्षणः॥
स चाख्यास्यति विप्रेभ्यो नैमिषीयेभ्य एव च।"[३०]

---

३० "अष्टादश पुराणदर्पण" पृष्ठ ३६८ व ३७०

अर्थात्—"हे वत्स ! सुनो- मैं तुम्हारे निकट वामन नामक पुराण वर्णन करता हूँ। यह पुराण त्रिविक्रम चरित संवलित और दश सहस्र श्लोक परिपूर्ण है। यह दो भागों में विभक्त है और इसमें कूर्म्मकल्प का समाख्यान और तीन वर्ग की कथा निरूपित हुई है।

.....

यह वामन पुराण प्रथम पुलस्त्य ने नारद के निकट कहा था, पश्चात् नारद के निकट से महात्मा व्यास मुनि ने प्राप्त किया।

हे वत्स ! व्यास के निकट से उनके शिष्य रोमहर्षण ने इसको पाया और उन्होंने ही नैमिषारण्यवासी ऋषियों के निकट इसको प्रकट किया।"

पं० ज्वालाप्रसाद मिश्र की समालोचना से वामन पुराण के कतिपय संस्करण प्रतीत होते हैं उनकी दी हुई विषय सूची तथा वेङ्कटेश्वर प्रेस के मुद्रित वामन पुराण का विषय प्रक्रम सर्वथा भिन्न है। उनके अभिमत में नारद में पुलस्त्य नारायण सम्वाद है। वेङ्कटेश्वर प्रेस में मुद्रित वामन में "पुलस्त्य और नारद संवाद" है। इस प्रकार अन्य विषयों में तथा उनके क्रमों में बहुत भेद है। वर्तमान प्राप्त पुराण की श्लोक संख्या ५८०० से अधिक नहीं है। मिश्रजी के कथनानुसार इसका उत्तर खण्ड लुप्त हो गया है।

पं० कालूराम शास्त्री कल्पना करते हैं कि:—".....किन्तु उपलब्ध वामन पुराण दशसहस्र श्लोकयुक्त पूर्ण नहीं है कुछ न्यून है।"[३१]

पं० माधवाचार्य शास्त्री भी कहते हैं;—".....परन्तु पद्म

३१ "पुराण वर्म" पूर्वार्द्ध, पृष्ठ १३१

संख्या में चार हजार की न्यूनता है। कहा जाता है कि इसका उत्तर भाग विलुप्त हो गया अतएव अपूर्ण है।"३२

ऐसे अपूर्ण पुराण को कौन प्रामाणिक मान सकता है ?

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र इस गड़बड़ का परिहार करने के लिए कहते हैं कि:—"श्लोक समूह किस प्रकार नष्ट हुए सो कुछ जाना नहीं जाता। प्रत्येक द्वापरयुग में व्यास होते हैं और वह पुरातन पुराणों को संकलन करते हैं, उसमें भी श्लोकों का न्यूनाधिक होना संभव है और यह भी संभव है कि किसी समय व्यासजी ने कुछ कथाओं का संग्रह किया है और किसी समय कुछ कथाओं का संग्रह किया है, जो पुराण दो द्वापरयुग के विद्यमान रह गए वह दो प्रकार के मिलते हैं।"३३

मिश्रजी की यह विचित्र कल्पना है, परन्तु यहां तो कृष्ण द्वैपायन के कहे या उनसे भी पुराने व्यास के कहे ये पुराण हैं या किसी और के यही सन्देह बड़ा भारी है।

पुराण के अपने लक्षणों को छोड़ कर साम्प्रदायिक जाल बिछा लेने से यही प्रतीत होता है कि ये सब लीला गद्दीदार कथक्कड़ व्यासों की है। पुराण परिभाषा के अनुसार कथा कहने से गद्दीदार का नाम भी व्यास ही है।

कूर्म्म पुराणः—

मत्स्य पुराण के मत से:—

"यत्र धर्म्मार्थकामानां मोक्षस्य च रसातले।

---

३२ "पुराण दिग्दर्शनम्" पृष्ठ २९

३३ "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ ३७३

माहात्म्यं कथयामास कूर्मरूपी जनार्दनः ॥
इन्द्रद्युम्नप्रसंगेन ऋषिभ्यः शक्रसन्निधौ ।
अष्टादश सहस्राणि लक्ष्मीकल्पानुषङ्गिकम् ॥"

—[मत्स्य पु० अ० ५३ श्लोक ४७-४८]

अर्थात्—जिस पुराण में कूर्म्मरूपी जनार्दन ने रसातल में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का माहात्म्य इन्द्रद्युम्न के प्रसंग में इन्द्र के निकट और ऋषियों के निकट वर्णन किया था और जिसमें लक्ष्मीकल्प का विषय वर्णित हुआ है वही अठारह सहस्र श्लोक-युक्त कूर्म्म पुराण है।'

नारद पुराण के मत से—

"तत् सप्तदशसाहस्रं सुचतुःसहितं शुभम् ।"[३४]

यह पुराण सत्रह सहस्र (१७०००) श्लोक युक्त है। प्रचलित कूर्म्म पुराण में केवल ६००० मात्र श्लोक हैं। इस पुराण के उपक्रम में ही लिखा है:—

"भवान्तषट्सहस्राणि श्लोकानामत्र संख्यया ।"

[कूर्म पुराण १।३५]

पं० कालूराम शास्त्री[३५] और पं० माधवाचार्य शास्त्री[३६] दोनों ही कूर्म पुराण में १७६०० श्लोक मानते हैं।

पाठकवृन्द किसको ठीक मानेंगे। मत्स्य पुराण १८०००,

---

३४ वही, पृष्ठ ३७६

३५ "पुराण वर्म" पूर्वार्द्ध, पृष्ठ १३२

३६ "पुराण दिग्दर्शनम्" पृष्ठ ३०

नारद पुराण १७०००, कूर्म पुराण ६०००, श्री कालूरामजी व श्री माधवाचार्यजी १७६०० श्लोक मानते हैं।

इसका निर्माणकाल अर्वाचीन प्रतीत होता है।

यह पुराण वैष्णव और शैव दोनों को ही घृणा की दृष्टि से मानता है।

"पाखण्डिनो विकर्मस्थान् वामाचारांस्तथैव च।
पञ्चस्थान् पाशुपतान् वाङ्मात्रेणापि नार्चयेत् ॥"

[कूर्म्म पुराण, उत्त० अ० १६, श्लो०१५]

अर्थ—"पाखण्डियों, विरुद्ध कर्म में लगे हुए और वाममार्ग पर चलने वाले तथा वैष्णव और शैवों को वाणीमात्र से भी आदर न करे।"

'पुराण दिग्दर्शन' लिख कर पुराणों की वकालत करने वाले पं० माधवाचार्य शास्त्री स्वयं वैष्णव मतावलम्बी हैं। इस पुराण के वचनानुसार तो पौराणिकों को चाहिए कि आपको वाणीमात्र से भी सत्कार न करे।

मत्स्य पुराणः—

नारदपुराण ४।२९-३० के अनुसार इसकी पद्यसंख्या (चतुर्दशदहस्रकम्)" १४००० है। देवी भागवत पुराण के अनुसार इसकी श्लोक संख्या १९००० है।

स्वयं मत्स्य पुराण के अनुसारः—

"श्रुतीनां यत्र कल्पादौ प्रवृत्त्यर्थं जनार्दनः।
मत्स्यरूपेण मनवे नरसिंहस्य वर्णनम् ॥
अधिकृत्याब्रवीत् सप्तकल्पवृत्तं मुनीश्वराः।

तन्मात्स्यमिति जानीध्वं सहस्राणि चतुर्दश ।।"

—[मत्स्य पु० ५३।५०]

अर्थात्—'जिस पुराण में कल्पकी आदि में जनार्दन ने मत्स्य रूप से श्रुत्यर्थ और नरसिंहवर्णन प्रसंग में सातकल्प का विषय वर्णन किया है, वही चौदह सहस्र श्लोकयुक्त मत्स्य पुराण है।

परन्तु प्रचलित मत्स्य पुराण की श्लोक संख्या १४-१५ सहस्र मात्र है ऐसा मिश्रजी ३७ मानते हैं।

पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार व श्री रामदेवजी बी० ए० ३८ इसकी श्लोक संख्या १३००० मानते हैं।

मिश्रजी इसमें क्षेपक मानते हैं। वे लिखते हैं:—

"....ऐसा ज्ञात होता है इसमें फेरफार न्यून है।"३९

पं० कालूराम शास्त्री इसमें क्षेपक मानते हुए लिखते हैं।—

"....इस समय जो उपलब्ध होता है उसकी संख्या पन्द्रह सहस्र है एक सहस्र श्लोक इसमें किसी पुराण के मिले हों अथवा क्षेपक हों।"४०

भविष्य पुराण:—

पौराणिक पुराणों को वेदव्यास कृत मानते हुए यह प्रमाण दिया करते हैं कि—

"अष्टादशपुराणानां कर्त्ता सत्यवती सुतः।"

---

३७ "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ३८९

३८ "पुराण मत-पर्यालोचन" पृष्ठ ३३७

३९ "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ ३८९

४० "पुराण वर्म" पूर्वार्द्ध, पृष्ठ १३३

अर्थात्—१८ पुराणों का बनाने वाला सत्यवती का पुत्र (व्यास) है। परन्तु भविष्य पुराण के प्रति सर्ग पर्व अ० २८, श्लोक १० से १७ तक में पुराणों के कर्त्ता भिन्न भिन्न माने गए हैं।

भविष्य पुराण के निर्माता के सम्बन्ध में स्वयं यह पुराण कहता है—

"महादेवेन लोकार्थं भविष्यं रचितं शुभम् ॥"

—[भविष्य पु० प्रतिसर्ग पर्व ३, खण्ड ३, अ० २८ श्लो० १४]

अर्थ—"महादेवजी ने लोकहित के लिए कल्याणकारी भविष्य पुराण को रचा।"

मत्स्य पुराण के मत से—

"यत्राधित्कृय माहात्म्य मादित्यस्य चतुर्मुखः।
अघोरकल्प वृत्तान्त प्रसङ्गेन जगत् स्थितम् ॥
मनवे कथयामास भूतग्रामस्य लक्षणम्।
चतुर्दश सहस्राणि तथा पञ्चशतानि च।
भविष्यचरित प्रायं भविष्यं तदिहोच्यते ॥"

[मत्स्य पु०, अ० ५३ श्लो० ३०–३१]

अर्थ—'जिस ग्रंथ में चतुर्मुख ब्रह्मा ने सूर्य का माहात्म्य वर्णन करके अघोर कल्पवृत्तान्त प्रसंग में जगत् की स्थिति और भूतग्राम के लक्षण वर्णन किए हैं जिसमें अधिकांश ही भविष्य चरित वर्णित और १४५०० श्लोक युक्त हैं, वह भविष्य पुराण के नाम से विख्यात है।'

शैव उत्तर खण्ड के मत से—"भविष्योक्ते भविष्यकम्" अर्थात्

भविष्योक्ति वर्णित होने से भविष्य पुराण नाम हुआ है।"

भविष्य पुराण की श्लोक संख्या जो भिन्न भिन्न पुराणों में दी गई है, एक विचित्र गोरखधन्धा प्रतीत होता है—

देवी भागवत में १५८०००, श्रीमद्भागवत में १८५०००, ब्रह्मवैवर्त में १४५०००, मत्स्य में १८५००, नारद में १४००० श्लोक संख्या भविष्य पुराण की मानी गई है।

स्वयं भविष्य पुराण की साक्षी:—

"व्यासजी के शिष्य सुमन्तु ने राजा शतानीक से कहा:—

"भिवष्यमेतदृषिणा लक्षार्द्ध संख्यया कृतम्।"

—[भविष्य पु०, ब्राह्मपर्व १ अ० १, श्लो० १०५]

अर्थ– "ऋषि ने यह भविष्य पुराण ५० सहस्र श्लोकों की संख्या वाला बनाया।

"षट् पादाधिकषट्षट्क सहस्र परिसंख्यया।
नव श्लोक शतोद्भुतं संपूर्ण स्याद्भविष्यकम्॥"

[भविष्य पु०, मध्यमपर्व २, अ० २०, श्लो० १७९]

अर्थ—"व्यालीस सहस्र नौ सौ (४२९००) श्लोकों की संख्या से भविष्य पुराण पूरा होता है।"

"षष्ट्याधिकाष्ट साहस्र नव श्लोक शतोद्भवम्॥"

—[भविष्य पु०, मध्यम पर्व २ अ० १ श्लो० १३]

अर्थ—"यह पुराण आठ सहस्र नौ सौ साठ (८९६०) श्लोकों से प्रकट हुआ है।"

भविष्य पुराण स्वयं अपने सम्बन्ध में श्लोकों की संख्या तीन

प्रकार की बतलाता है। ऐसा क्यों ?

यदि मानलें कि तीनों संख्याऐं भिन्न भिन्न काल में किए गए तीन संस्करणों की सूचक है तो वर्त्तमान भविष्य पुराण जो श्रीवेङ्कटेश्वर प्रेस में विक्रम संवत् १९६७ में द्वितीय बार में मुद्रित में श्लोक संख्या २६१०० दी है।

अब पौराणिक बतलावें कि इन चारों में से वास्तविक भविष्य पुराण कौन सा है ?

भविष्य पुराण में इस प्रकार दुगुने से भी अधिक विस्तृत हो जाने का कारण इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि साम्प्रदायिकों ने भविष्य नाम की आड़ लेकर जो भी कथा कान से सुनी उसी समय संस्कृत के पद्यों में बाँधकर भविष्य पुराण में बढ़ा दी। उद्धारण स्वरूप विक्रमादित्य की कथा के साथ ही साथ 'बैताल पचीसी' और 'सिंहासन बत्तीसी' की सर्वथा आधुनिक कहानियों की भी चर्चा है।

प० ज्वालाप्रसाद मिश्र भविष्य पुराण की आलोचना करते हुए "अष्टादश पुराण दर्पण "पृष्ठ २५३, में लिखते हैं:—

(नारदीय पुराण का उद्धरण देते हुए):—

उद्धृत प्रमाण के अनुसार ४ र्थ वा भविष्योत्तर के अतिरिक्त १ म २ य ३य भविष्य में कुछ कुछ प्राचीन भविष्य के लक्षण पाए जाते हैं। इन तीन प्रकार के भविष्यों में आदित्य माहात्म्य वर्णित होने पर भी अघोर कल्प वृत्तान्त अथवा ब्रह्मकर्तृक मनु के निकट जगत् स्थिति का प्रसंग नहीं है।

नारदपुराण के अनुक्रमानुसार भविष्य पाँच पर्वों में विभक्तहै:—

ब्राह्म, वैष्णव, शैव, सौर और प्रतिसर्ग पर्व । हमारी समझ में १म भविष्य के उपक्रम में भी इन पांच पर्वों की कथा है। इस समय नारदीय मत से इस १म भविष्य के केवल ब्राह्म पर्व का सन्धान पाया जाता है। इस पोथी में और चार पर्व नहीं है। मात्स्योक्त चतुर्मुख कथित आदित्य माहात्म्य इस ब्राह्मपर्व में दीखता है।

नारद मत से अष्टमी कल्प से वैष्णव पर्व आरम्भ,२ भविष्य के १५१ अध्याय से विष्णुपर्व और अष्टमी कल्प का आरम्भ देखा जाता है। किन्तु इस २ य भविष्य में उसके पूर्वमें जितनी कथा हैं, किसी किसी स्थान में १ में भविष्य के साथ मेल होने पर भी अधिकांश स्थल में ही मेल नहीं है। संभवतः इसका अधिकांश ही प्रक्षिप्त वा परवर्त्ती काल में संयोजित है ।

कहीं १ म भविष्य के ब्राह्मपर्व में १३१ अध्याय हैं, किन्तु इस दूसरे भाविष्य में विष्णु पर्व के पूर्वांश में १५० अध्याय पाये जाते हैं अधिकांश पुराणों के मत से भविष्य की श्लोक संख्या चौदह हजार है। किन्तु द्वितीय भविष्य के प्रथम अध्याय में लिखा है कि, भविष्य पुराण की श्लोक संख्या ५०००० हैं। शिव पुराण की वायु संहिता में परिवर्द्धित और नवकलेवरप्राप्त शिव पुराण जैसे लक्ष श्लोकात्मक कहा है, दूसरे भविष्य की उक्ति वैसे ही अत्युक्ति समझनी चाहिए।

इस अंश में बहुत से विषय संयोजित हुए हैं, इस कारण रुरु-वध (२५०अ०) आदि कोई कोई विषय एक से अधिकार वर्णित देखा जाता है। ऊपर कह आये हैं कि, नारद पुराण के मत से अष्टमी कल्प से ही विष्णु पर्व आरम्भ है, किन्तुद्वितीय भविष्य में अष्टमी कल्प से ही विष्णु पर्व निर्दिष्ट होने पर भी इस पर्व में विशेष रूप से रुद्र

माहात्म्य वर्णित होने से इसके साथ शैवपर्व भी सम्मिलित हुआ है, ऐसा ज्ञात होता है, शेषांश में सौरपर्व के विषय का भी प्रभाव नहीं है, किन्तु प्रतिसर्ग पर्व नहीं पाया गया।

....आपस्तम्ब धर्मसूत्र में भविष्य पुराण का प्रसंग है, द्वितीय भविष्य के द्वितीय अध्याय में उक्त विषय का सन्धान पाया है। इससे जाना जाता है कि, इस अंश में अनेक वस्तु प्रक्षिप्त होने पर भी आदि पुराण की अनेक कथा विद्यमान है।

उपरोक्त दोनों भविष्य की अपेक्षा ३ य भविष्य में ही कुछ विशेष मेल मिला है। इसमें भविषय का कोई कोई लक्षण होने पर भी इसकी विशेषवर्ती काल की रचना बोध होती है, जिस समय समस्त भारत में तान्त्रिक प्रभाव ने विस्तार लाभ किया था यह तृतीय भविष्य संभवतः उस समय की रचना है, तीसरे भविष्य के सातवें अध्याय में आगम तन्त्र, जामल और डामरादि की कथा विवृत हुई है।

मात्स्य मत से भविष्य पुराण में अनेक भविष्य कथा हैं। प्रथम और तृतीय भविष्य से उसका कुछ कुछ परिचय पाया जाता है, तीसरे भविष्य के नवम अध्याय में म्लेच्छोक्त शास्त्रादि परित्याग की बात है, दशम अध्याय में कलि में निगम ज्योतिष और वेद के संग्रह में दोष कथन और मनसा, षष्ठी, दशहरा आदि की पूजा कथा है, और एक वैज्ञानिकों का ज्ञातव्य विषय है, वह "उद्भिज्ज विद्या का वृतान्त Botany दूसरे किसी पुराण में उद्भिज्ज विद्या का ऐसा प्रसङ्ग नहीं है।"

मिश्रजी की इस लम्बी आलोचना से स्पष्ट है कि भविष्य पुराण के कितने ही संस्करण हो गए हैं। और वे सब एक दूसरे

से कितने भिन्न हैं। इनमें कितने प्रक्षेपक और, कितनी आयुक्तियों के विषय हैं जिस पर भी उसको व्यास देव की कृति मानना कितनी भारी भूल है।

मेरी सम्मति में सभी साम्प्रदायिकों की अपेक्षा रख कर यह भविष्य पुराण रचा गया यह किसी शाकद्वीपी ब्राह्मण ने सूर्योपासना को स्थिर तथा प्रचारार्थ सूर्य के उपासक भूमिपालों की प्रेरणा से बनाया है। इन सूर्योपासकों के अतिरिक्त अन्य देवता के उपासकों के विरोध को हटाने तथा कम करने के लिए इसमें अन्य देवताओं के लिए भी एक एक पर्व में स्थान दिया गया है।

पाश्चात्य विद्वान् श्री एच. एच. विलसन इस पुराण के विषय में इस प्रकार लिखते हैं कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के पुस्तकालय में तीन प्रतियाँ भविष्य पुराण की हैं जो कि सम्पूर्ण ही प्रतीत होती हैं। उनमें से दो के परस्पर प्रतिपाद्य विषय मिलते हैं उनकी श्लोक संख्या लगभग ७००० के है। एक दूसरा ग्रन्थ है जिसका नाम भविष्योत्तर है, यह पूर्वग्रन्थ का उत्तर खण्ड प्रतीत होता है। इसको श्लोक संख्या भी ७००० है परन्तु मात्स्योक्त विषय लक्षण के साथ कोई मेल नहीं खाता।

वर्तमान में प्रचलित भविष्य पुराण में शतानीक प्रष्टा तथा सुमन्तु प्रवक्ता है। इस भविष्य पुराण का निर्माण द्विजातियों के लिए नहीं है प्रत्युत शूद्रों पर दया करके उनके लिए यह पुराण बनाया गया है †

इस पुराण में 'आदम तथा हव्वा का वृत्तान्त' प्रतिसर्ग पर्व

† "त्रयाणामपि वर्णानां ..... " भविष्य पुराण ब्रा० प० १ अ० १

३ अ० ४ श्लो० १५ से १९), कुरान का अनुवाद (प्रतिसर्ग पर्व ३, खण्ड १ अ० ४ श्लो० २८ से ३४ तक); हज़रतनूह की किश्ती (प्रतिसर्ग पर्व ३, ख० १, अ० ४, श्लो० ४५ से ५४ तक); हज़रत मूसा (प्रति सर्ग पर्व ३, खण्ड १, अ० ५), ईसा मसीह का वर्णन (प्रतिसर्ग पर्व ३. खण्ड ३, अ० २ श्लो० २१ से ३१ तक), हज़रत मुहम्मद साहब का वर्णन (प्रतिसर्ग पर्व ३, ख० ३, अ० ३, श्लो० ५ से २७ तक), अंग्रेजों का वर्णन (प्रतिसर्ग पर्व ३, ख० ४, अ० २२ श्लो० ६३ से ८९ तक); है जिससे स्पष्ट प्रकट होता है कि यह पुराण आधुनिक है।

पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र अपनी पुस्तक "अष्टादश पुराण दर्पण" पृष्ठ १८-१५ में लिखते हैं:—

" अध्यापक विल्सन, दत्त तथा समाजी आदिकों का इनको आधुनिक समझना भूल की बात है, यदि किसी पुराण में आधुनिक अंश प्रक्षिप्त हो तो क्या पूर्वकाल से भारत में अठारह पुराण प्रचलित नहीं थे, ऐसा कहा जा सकता है। कभी नहीं। इसमें दो एक उदाहरण देने से ही सन्देह दूर हो जायगा। आपस्तम्ब धर्मसूत्र में इस प्रकार पुराणों के वचन उद्धृत हुए हैं:—

अथ पुराणे श्लोकावुदाहरन्ति:—

"अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजाभीषिरर्षयः।
दक्षिणेनार्यम्णः पन्थानं ये श्मशानानि भेजिरे॥
अष्टाशीतिसहस्राणि ये प्रजेनोषिरर्षयः।
उत्तरेणार्यम्णः पन्थानंतेऽमृतत्वं हि कल्प्यते॥"

—आपस्तम्बधर्मसूत्र २।२६।३५।

पुराणों से उन्होंने इन ही दो श्लोकों का उदाहरण दिया है।"

किन्तु महान् प्रयत्न करने पर भी पुराणों में मिश्रजी को ये दो श्लोक नहीं मिले। क्या मिला यह मिश्रजी के शब्दों में ही सुनियेः— वे पृष्ठ १९ पर लिखते हैंः—

"आपस्तम्ब में जो पुराण वचन उद्धृत हुए हैं पुराणों में भी वैसे ही वचन पाये जाते हैं जैसा कि, ब्रह्माण्ड पुराण में लेख है।"

मिश्रजी ने जो ब्रह्माण्ड पुराण से श्लोक अपनी पुस्तक पृष्ठ १९-२० में उद्धृत किए हैं उन्हें उद्धृत किया हैः—

"अष्टाशीतिसहस्राणि मुनीनां गृहमेधिनाम्।
सवितुर्दक्षिणं मार्गमाश्रिताह्याचन्द्रतारकम्॥
क्रियावतां प्रसंख्यैषा ये श्मशानानि भेजिरे।
लोक संव्यवहारेण भूतारम्भकृतेन च॥
इच्छाद्वेषरताच्चैव मैथुनोपगमाच्च वै।
तथाकामकृतेनेह सेवनाद्विषयस्य च॥
इत्येतैः कारणैः सिद्धाः श्मशानानहि भेजिरे।
प्रजैषिणस्ते मुनयो द्वापरेष्पिह जज्ञिरे॥
नागवीथ्युत्तरे यच्च सप्तर्षिभ्यश्च दक्षिणम्।
उत्तरः सवितुः पन्था देवयानस्तु स स्मृतः॥
यत्र ते विशिनः सिद्धा विमला ब्रह्मचारिणः।
सन्ततिं ये जुगुप्सन्ते तस्मान्मृत्युर्जितस्तुतैः॥

अष्टाशीति सहस्राणि तेषामप्यूर्ध्वरेतसाम् ।
उदक्पन्थानमर्य्यम्णः श्रिताह्याभूत संप्लवात् ॥
इत्येतैः कारणैः शुद्धैस्तेऽमृतत्वंहि भेजिरे ।
आभूतसंप्लवस्थानममृतत्वंविभाव्यते ॥"

—(ब्रह्माण्ड पुराण अनुषङ्गपाद अ० ५४ श्लो० १५९-१६६) ।"

जिसको थोड़ी भी बुद्धि है वह भी समझ सकता है कि मिश्रजी ने सर्वथा गप्प लिखा है। आपस्तम्ब तो पुराण के नाम से दो श्लोक उद्धृत करता है किन्तु मिश्रजी पूरे आठ। अब दो और आठ को एक मानने वाले को क्या समझना चाहिए, यह विज्ञ पाठक ही समझ सकते हैं। पाठक वृन्द पीछे देख चुके हैं कि किस प्रकार सहस्रों श्लोकों का अन्तर होने पर भी ये भेद नहीं मानते। मिश्रजी की वही बुद्धि यहाँ भी काम कर रही है। आप पुनः पृष्ठ २० में लिखते हैं:—

"विष्णुपुराण अ० ३।८ और मत्स्य पुराण अध्याय १२४ श्लोक १०२ से ११० तक ठीक इसी प्रकार के श्लोक हैं।"

यहाँ भी मिश्रजी आठ श्लोकों का हवाला देते हैं। दो और आठ को कौन माने ?

मिश्रजी का चित्त इस अनर्थ आलाप पर बेतरह व्यग्र है। अतः वे एक और प्रमाण देने की चेष्टा में लिखते हैं:—

(पृष्ठ २०-२१):—"अब आपस्तम्ब धर्म सूत्र के द्वारा वह विदित हो गया कि इस सूत्र रचना से प्रथम भी पुराण प्रचलित थे। ब्रह्माण्ड पुराण के अन्यत्र स्थल में भी इसी प्रकार के श्लोक

पाये जाते हैं यथा—

अष्टाशीति सहस्राणि प्रोक्तानि गृहमेधिनाम् ।
अर्यम्णो दक्षिणा ये तु पितृयानं समाश्रिताः ॥
गृहमेधिनां तु संख्येयाः श्मशानान्याश्रयन्ति ये ।
अष्टाशीतिसहस्राणि निहिता ह्युत्तरायणे ॥
ये श्रूयन्ते दिवं प्राप्ता ऋषयश्चोर्ध्वरेतसः ॥

६५।१०३–१०४

इन श्लोकों का धर्मसूत्र के साथ में पूरा मेल पाया जाता है। पद्म पुराण के सृष्टि खण्ड में भी इसी प्रकार श्लोक है—

अष्टाशीतिसहस्राणां यतीनामूर्ध्वरेतसाम् ।
स्मृतं येषां तु तत्स्थानं तदेव गुरुवासिनाम् ॥"

क्या कोई कह सकता है कि यह वही श्लोक हैं जो आपस्तम्ब ने पुराण के नाम से उद्धृत किए हैं। क्या पद्म पुराण के श्लोक वही हैं। संख्या की गड़बड़ यहाँ भी है।

इसके आगे पृष्ठ २१ में ही मिश्रजी ने एक वाक्य आपस्तम्ब का उद्धृत किया है जिसे आपस्तम्ब ने 'भविष्य पुराण' का कहा है। मिश्रजी ने उसके बदले साढ़े तीन श्लोक भविष्य पुराण के दिखलाए हैं। उन श्लोकों को लिखने से पूर्व लिखते हैं:—
"भविष्यत पुराण में यह कथा है।"

परन्तु यहाँ तो प्रश्न कथा का नहीं वरन् प्रश्न तो उन श्लोकों या उस वचन के मिलने का है। यदि कथा मिलने से संगति मिल

जाती है तो क्या कोई पौराणिक यह कहने का साहस कर सकता है कि महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के उद्धृत श्लोक का आशय मनु में नहीं ? भीषण प्रयत्न करके भी आप 'आपस्तम्ब' के पुराण वचन किसी भी पुराण से नहीं दिखा सके।

आश्चर्य है कि "विविधानि च रत्नानिविविक्तेषूपपादयेत्" (मनु०) के समान अर्थवाला श्लोक मनुस्मृति ११।६ में मिलने पर भी मिश्रजी महर्षि दयानन्दजी पर आक्षेप करते हुए लिखते हैं कि:—

"यह और भी द्रव्य लेने को कपटजाल प्रकट कर मनु के नाम से श्लोक कल्पना किया है सारी मनुस्मृति देखिए कहीं भी यह श्लोक नहीं लिखा है, यतियों को धन देने से पाप होता है.....।"४१

मिश्रजी ने यहाँ महर्षिजी पर अपशब्द की वृष्टि की है किन्तु आप अपनी अवस्था पर दृष्टि पात नहीं करते। मिश्रजी को महर्षि दयानन्दजी पर रोष करने का साहस कैसे हुआ ? मिश्रजी की इस अवस्था पर दया आती है। अतएव मिश्रजी की महर्षि दयानन्दजी के भेंट को वापस करते हैं।

इन उपर्युक्त सभी प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि वर्तमान अष्टादश पुराणों की अनवस्था है और पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र ने जो व्यवस्था दी है वह उचित नहीं है। मैंने अष्टादश पुराणों पर ऊहापोह से जो विचार किया है तो उसमें अनेकों श्लोक प्रक्षिप्त हैं, और साम्प्रदायिकों ने श्लोक बना बना कर पुराणों के कलेवर की वृद्धि की है।

अतः ऐसे पुराणों को परित्याग करके वेदों की ही शरण में जाने से कल्याण हो सकता है।

---

४१. "दयानन्द तिमिर भास्कर:" तृतीय संस्करण, पृष्ठ १९६.

इत्यलम्

वेदव्रत ग्रंथमाला का ३ य पुष्प

मनोवैज्ञानिक जादू-विद्या के चमत्कार

(MIRACLES OF PSYCHOLOGICAL MAGIC ART)

Price Rs 5/- मूल्य ५) डाक व्यय पृथक्

वेदव्रत ग्रन्थमाला का २ य पुष्प

अद्भुत वैज्ञानिक जादू कौशल

(WONDERFUL SCIENTIFIC MAGIC TRICKS)

यह बड़ी ही अद्भुत पुस्तक है। विज्ञान के छात्रों के लिए बड़ी उपादेय और सहायक है। मू० ५।)

दोनों एक साथ मगाने पर डाक व्यय माफ धनादेश से १०.७५ भेजें। प्राप्ति स्थान:—

जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा।

शीघ्र छपेंगी:—

१. मेरी आठरोचक कहानियां

२. गणित के जादू

३. कुशवाहा का अद्भुत जादू-प्रतिष्ठान

इस संबन्धमें साहित्य प्रचारक मासिक में यदाकदा सूचनाएं छपती रहती हैं।

सब प्रकाशन मिलने के पते:

१. जादू सम्राट शिवपूजन सिंह कुशवाहा पथिक बी. ए.
C/O कूपरएलन ब्राञ्च, फ्लेक्स सेल्स ऑफिस
कानपुर (उ० प्र०)

२. जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा १.

३. पण्डित एण्ड कं. पो.बा. ४६ बड़ोदा

श्री आचार्य वैद्यनाथ शास्त्रीद्वारा रचित

शिक्षण तरङ्गिणी—पृ० सं० २२० बढिया छपाई शिक्षा के प्रारम्भिक वैदिक काल से लेकर मनोविज्ञान की स्थिति उपनिषदों में शिक्षा का रहस्य, गणित विज्ञान, भारतीय साहित्य में मेष वाद्य शिरोमणि वीणा इ० विषयों का समावेश है मू० ५) डाक व्यय पृथक्।

वैदिक ज्योति पृ० सं० २५० से अधिक बढिया छपाई ४० प्रकरण। वैदिक 'क' और 'ख' ऋषि दयानन्द और वेद, देवता वैदिक आपस्तत्व का दार्शनिक स्वरूप परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव, परम सत्य का खोजी ब्रह्मानन्द को प्राप्त करता है मृत्युंजयता का मार्ग इ० अनेक गहन विषयों को सरलता पूर्वक सुलभ ढंग से समझाया गया है मू० ७) डाक व्यय पृथक्।

कर्ममीमांसा—नवीन संशोधित संस्करण में नीति के मूल तत्व, आपद्धर्म कर्तव्य, और अधिकार, नीति पर आदि मौलिक तथा सारगर्भित सामग्री दी है। मू० २.२५ न. पै.

अद्भुत वैज्ञानिक जादू कौशल

जिसमें समस्त विज्ञान के खेल हैं। कालेजों में पढ़ने वाले सायन्स के छात्रों के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं। इसके अतिरिक्त इसमें द्रव्योपार्जन के लिए सस्ते और परीक्षित औद्योगिक नुस्खे तथा प्रत्येक जादूगरों के जानने के लिये सभी बातों पर प्रकाश डाला है। आज ही आर्डर दें मू० ५।) रु०

विश्वधर्म्म परिचय समस्त प्रचलित मतों सम्प्रदायों के सम्बन्ध में तुलनात्मक अभ्यास के लिए एक उच्चतम ग्रंथ मूल्य सजिल्द ६) रु० डाक व्यय पृथक मू० सं० ५०० से ऊपर

जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा।

गुरु विरजानन्द टोड़ी
सन्दर्भ पुस्तकालय
प्र परिग्रहण क्रमांक 2863
आनन्द महिला महाविद्यालय, कुण्डी

अपने ढंग की सर्व प्रथम सचित्र हिन्दी में

नैसर्गिक नारी सौन्दर्य

ले०—कु० सुशीला आत्मारामजी पण्डित

विषय सूची—प्रस्तावना

सुन्दरता जीवन का आधार है
स्त्रीसौन्दर्य की विशेषतायें
प्राणायाम, सूर्यनमस्कार तथा स्नान
स्नायुओं का गठन और सुडौल शरीर
शरीर की स्थिति स्थापकता
सर्वाङ्गासन तथा शीर्षासन
ग्रीवा, वक्षस्थल, भुज तथा स्कन्ध
कमर पेट तथा नितम्ब
सुन्दर हाथ पांव
केश, चक्षु तथा दांत
त्वचा का संरक्षण
स्वास्थ्य के कुछ साधन और सेद्धान्त
आहार और शारीरिक सौन्दर्य
सुन्दर शरीर और वस्त्रधारणकला
कुछ ज्ञातव्य विचार
(१) ऋतुकाल या मासिक धर्म
(२) गर्भवती महिलाएं
(३) कुटुम्बनियोजन
मानसिक स्वास्थ्य और सुंदरता
१७. सुन्दरता के प्रसाधन
(१) उपवास (२) नींद
(३) कला (४) खेल (५) स्काउटिंग तथा गर्लगाइडिंग
१८. उपसंहार

इतने विषयों का समावेश सचित्र ३७ चित्रोंसहित जो आर्ट पेपर पर छापे हैं सजिल्द बयनामिराम बाइंडिंग की पुस्तक का लगतमात्र मूल्य रु. ३-५० है डाक व्यय रजिस्टरी १)। रु० ४-५० का धनादेश भेजने पर घर बैठे रजिस्टरी द्वारा पुस्तक कु० सुशीला पण्डित आत्माराम पथ बड़ौदा. मिल जाएगी। विदेश में मूल्य ५) है।

BOOKSELLER BARODA

ADVT RATES.

Per Page Rs. 20/- P.m.
Half Page Rs. 12/- P.m.
Quarter Page Rs. 7/- P.m.
Payable with the advt.

JAIDEVA, BROS BARODA.

ओ३म् खम्ब्रह्म

अष्टादश पुराण परिशीलन

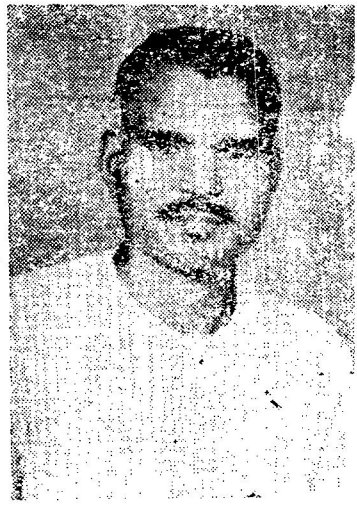

लेखक

जादूसम्राट, वैदिकगवेषक आचार्य शिवपूजन सिंह कुशवाहा 'पथिक' बी० ए० साहित्यालङ्कार, विशारद, विद्यावाचस्पति, सिद्धान्त वाचस्पति, ए. आई. एम. सी. (कलकत्ता) कानपुर।

प्रकाशक

जयदेव ब्रदर्स बड़ोदा

वेद व सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०६१ दयानन्दाब्द १३६.
सं० वि० २०१८, सन् १९६१

प्रथम संस्करण मू० ७५ न. पैसे

प्रवासी प्रेस, आदर्श नगर, अजमेर।